भस्म अंग सोहे, रुचि नीलकण्ठ मोहे,
मन हाथ में त्रिशूल राजे, चन्द्रमा ललाट पै।
गरे में भुजन्ग हार, जूरे बीच गंगाधर,
आसन लगाय बैठे, ऊँचे शैलराट पे।
तीन नेत्र धारी, अविकारी, सुखकारी,
महाबैल की सवारी, बलिहारी ठाटबाट पै।
काशी के समान, आशुतोष भगवान प्रभु,
लाइकें बिराज हौ, बटेश्वर के घाट पै।

स्व. गोपेश्वर नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा)

1927-1979

-संक्षिप्त परिचय-

परम पूज्य पिता **स्व. गोपेश्वर नाथ चुतर्वेदी** का जन्म उत्तर प्रदेश के आगरा जनपद अंतर्गत होलीपुरा ग्राम में स्व. रामरतन चतुर्वेदी के यहाँ 4 मई, १९२७ को हुआ। शिक्षा-दीक्षा गाँव के दामोदर इण्टर कॉलेज से प्राप्त कर आप १९५० में कलकत्ता स्थित यूको बैंक में सेवारत हुए। आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, गौरवर्ण, उन्नत ललाट पर चन्दन की दमक व मृदुभाष्य से पूर्ण आपका जीवन प्रेरणास्पद रहा। नित व्यायाम, गंगा स्नान, स्वाध्याय, परोपकार, भजन-कीर्तन एवं धीर-गम्भीर स्वभाव युक्त आपकी जीवनशैली एक सच्चे कर्मयोगी की रही। आपने आजीवन बड़ाबाजार स्थित आवास पर 'राम संकीर्त्तन मण्डल' की प्रति रविवार बैठक का आयोजन किया। यहाँ कीर्तन के साथ लंगुरिया, मल्हार एवं होली गायन भी होता था। 'सादा जीवन उच्च विचार' वाली उक्ति को चरितार्थ करते हुए, परोपकार एवं आध्यात्मिक गृहस्थ-संन्यासी का जीवन यापन कर अक्षय तृतीया के दिन २८ अप्रैल, १९७९ को आपने इहलीला के बाद प्रभु शरण प्राप्त की। **हमारी विनम्र श्रद्धांजलि-**

राकेश चतुर्वेदी, राहुल चतुर्वेदी : 'गोपेश्वर निवास', ३५वी, एन. एस. रोड, रिसड़ा, फोन : २६७२११७२/ ९८३०४९८७१५

भरत चतुर्वेदी, आकाश चतुर्वेदी : 'कृति अपार्टमेंट', ८९/३५१, बांगुर पार्क, रिसड़ा, मो. ९८३०६३१४६४/ ७०५९०८६७७५

करुणेश चतुर्वेदी, आयुष चतुर्वेदी : डी-९, फ्लैट नं. १०४, 'गुंजन अपार्टमेंट', सिटी सेंटर, ग्वालियर, म. प्र., मो. ९९९३०५८९४४ / ७९७४२७१८१२

पिताजी द्वारा हस्तलिखित गायत्री मंत्र

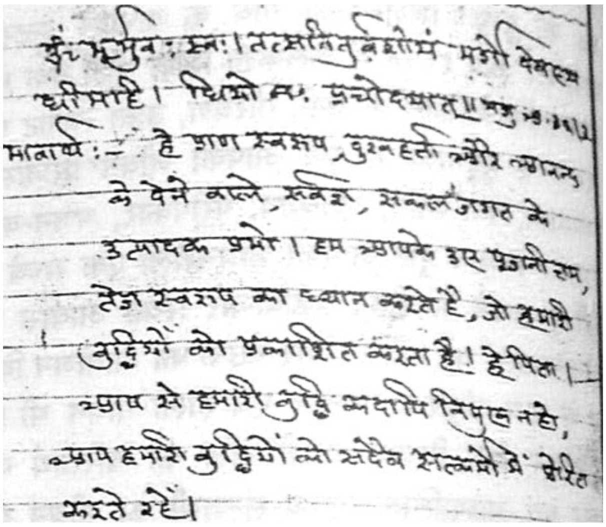

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ यजु. ३६.३

भावार्थः- हे प्राण स्वरूप, दुःखहर्ता और आनन्द के देने वाले, सविता, सकल जगत के उत्पादक प्रभो। हम आपके उस पूजनीयतम, तेज स्वरूप का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। हे पिता। आप से हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो, आप हमारी बुद्धियों को सदैव सत्कर्मों में प्रेरित करते रहें।

उनका अंतिम उद्भाषित वाक्य-

''संसार में रहते हुए,
कष्टों को सहन करता हुआ,
अपने विवेक को न खोने वाला ही
महात्मा कहलाता है।''

निवेदन

'**रंग सरस**' का चतुर्थ संस्करण नई साज-सज्जा के साथ आपकी सेवा में उपस्थित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। किसी भी पुस्तक के चार संस्करण प्रकाशित होना उसकी लोकप्रियता एवं उपयोगिता का स्वत: प्रमाण है। आशा है भविष्य में भी आप सबके सहयोग से यह मशाल निरन्तर प्रज्जवलित होती रहेगी।

लोक संगीत ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा जन सामान्य का उल्लास व भावनायें अभिव्यक्त होती हैं। यह विधा माटी की सौंधी महक के साथ 'श्रवण सुनत कटि जात पाप, जहँ सीताराम खेलें होरी' के सामूहिक गायन और ढोलक की थाप के साथ जब परवान चढ़ती है तब रसिया, धमार, विहाग आदि की गूँज द्वार पर फगुनाहट की दस्तक देती है। हम अपनी परम्परा को गुंजायमान कर सकें, यही इस प्रकाशन का ध्येय रहा है। इस सरस काव्य संकलन में कई रचनायें 'रंग झर बरसे री', 'भदावरी होली' जैसे वृहद संकलनों से साभार ली गई हैं। जैसाकि आप जानते हैं कि होली गायन की गोष्ठियों में वृहद संकलन ले जाने और खोजने की असुविधा को ध्यान में रखकर '**रंग सरस**' के प्रकाशन की रूपरेखा बनी थी। इस संकलन में हम अपने परिवार का वंश वृक्ष भी प्रकाशित कर रहे हैं। पिता **स्व. गोपेश्वरनाथजी** की मधुर स्मृति में प्रकाशित '**रंग सरस**' का यह चतुर्थ संस्करण हम आपको सादर समर्पित करते हैं। पालागन सहित,

करुणेश चतुर्वेदी, होलीपुरा/ ग्वालियर
७९७४२७१८१२

रंग सरस

अनुक्रमणिका

खण्ड-क	क्रम संख
अब कुबजा सो प्रीति	८
अब तो सखी फागुन रितु आयौ	२
अँखियन भरत अबीर	२
अबकी होरी मैं खेलोंगी डटिकें	७
अबीर मलौंगी कपोल तिहारे	७
आज सदा शिव खेलत होरी	०
आज सखी प्रीतम पाऊँ	८
आजु कैसो बनौ ब्रजराज	०
आई री ढफ बाजन लागे	१
आना रे हमारी, श्याम गलियाँ	१
आजु बसन्त बना बनि आयौ	२
आजु श्याम के मैं अंक लगौंगी	३
आजु नगर में धूम मची है	५
आयो बसन्त कहो उन हरि सों	६
आज दधि बेचन ना जाऊँगी	७
ऊधौ! बावरे भये हो	१
ऐसे कहाँ मेरे भाग, पिया संग	२
ऐसो रंग न डारौ मोपे सुघर श्याम	३
ऐसी चतुर ब्रज नारि	६
ऐसौ चटक रंग डारौ कन्हैया	६

कहा बानि परि सैयाँ तोरी रे	२
कान्हा तुम्हीं का ब्रज के इजारदार	२
कान्हा रे बरजि हारी तुमको	६
काहे गुलाल सैयाँ हम पै डारौ	६
गगरिया घर धरि आऊँ	६
गारी दई और कांकर मारौ	६
गारी न दै जसुदा के लला	९
गोरी होरी खेलन कौं आयो श्याम	९
घूँघट कौन करे	१
घोल री मो पे रंग की घोला घोल	६
चहुँ ओर नदिया रंग सों भरी	४
चली चलि यों ही बकै दैया मारौ	५
छाप तिलक सब छीनी	८
जा सों बिन होरी खेलै न जाऊँगी	५
जुबनवा मद के भरे	०
जुबनवा बैरी भये	४
जो तुम श्याम कुबरी सों राजी	१
जिनि जाउ री आजु कोउ पनिया भरन	९
डगर मोरी छाँड़ौ श्याम	३
तू बड़ भाग सुहाग भरी	२
ननदुलि बैर परी	१
ननदिया मोहि ना सतावौ	५
नई रे नारि नव जोवन बारी	६
नाथ मेरो क्या बिगड़ेगा	८

निर्दयी संग खेली होली	९२	३४
पालागौं कर जोरी	४१	१५
पिया को मनाय लाऊँ पैयाँ परौंगी	७१	२६
बन को चले दोऊ भाई	०४	०२
बाँसुरी बनि बाजि रही री	१४	६
बन बोलि कोइलिया शौर करे	२१	०९
बाट चलत या अनौखे लला	३९	१५
बेदरदी काढ़ि दै	४२	१६
ब्रज में खिलन मति जाउ	४९	१८
ब्रज कुंजन में जाइ पाकरि	९३	३५
बनि आई हैं चातुर नारि	५५	२१
मानौ या न मानौ मेरी सुनौ	०९	०४
मनमोहिनी रिझवारि री	१७	०८
मन लै गयौ आज कन्हैया	८७	३३
मालिनी मैं ना बसन्त बधाऊँ	१९	०९
मैं तो लाज की मारी न मटकी	३१	१२
मैं तो जानति नाहीं वाकौ नाम गाम	१८ (क)	०८
मैं तो याही छैल सो हारी	८४	३१
मेरी बहियाँ पकरि लीन्हीं थाम थाम	३२	१३
मेरौ अब कैसे निकसन होइ	८९	३३
मदमातौ छैल ठाढ़ौ रोकै गैल	४५	१६
मन मतवाला जपूँ कैसे माला।	९०	३४
मति जाउ री आजु कोउ पनिया भरन	४८	१८
मत मारौ पिचकारी श्याम	७७	२९
मेरा मन मोहना बंशीवाला	८२	३१

यह दिन चार बहार री	८०	३०
रंग डारौंगी वाही पे जाने तोरयौ है धनुक	०२	०१
रँगीले रँग महल में, खेलि रहे	०३	०१
री! कछु पीर न जाने	२९	१२
रँग डारे मोहन हम पे भागो न जाय	५४	२१
लाल मोरी अँखियन करकै	३०	१२
लला हो रँग की चोट मेरे भारी	३८	१४
लाल ही लाल भये	५९	२३
लगि जायगी मेरे चुभि जायगी	६४	२५
श्रवण सुनत कटि जात पाप	०५	०२
सुमंगल दाहिने होरी खेलत	०१	०१
सखि री! या बृज में अब कैसे बसै	४०	१५
सखी कछु जतन करौरी	९१	३४
सांबरिया तू बेगि खबर लीजो	९४	३५
साजि के जो चलीं	५२	२०
श्यामा श्याम सों होरी खेलत	५६	२१
श्याम होरी खेलन हमसो न आवै	८८	३३
सारे जग में होरी या ब्रज में होरा	७३	२७
होरी आजु जरै चाँहि कालि	११	०५
होरी कौ लंगर नहिं आयौ ननदिया	२४	१०
होरी शंकर खेलैं भवन में	३३	१३
हमें घर जान दै	३६	१४
होरी खेलत मेरो मुख मति मीजौ	४३	१६
होरी खेलन कैसे जाउ सखी री	४४	१६
होरी हो ब्रज राज दुलारे	५३	२०

खण्ड-ख	क्रम संख्या	पृष्ठ संख्या
आइ गई सब गोरी गोपाल बनीं	११२	४२
ए मद छकीं ग्वालिनि	९५	३६
ए वीर मेरी पीर जानै	११०	४१
ए मनाओ राजन ना	१०७	४०
को खेलै ब्रज होरी रे ऊधौ	१०४	३९
गाँव रसवादी के डर डरियै	१०९	४१
गोरी गोकुल गाँव न बसियै	१०५	३९
दम्पत्ति रास रच्यौ या ब्रज में	१०६	४०
मारु जी मतवारौ ढौलना	१०८	४१
मोहन तुम जिनि जानो ढीठ लंगर हो	१११	४२
लाडिली मान न करियै	९७	३६
सजि सजि आवत हैं ब्रज बाल	९८	३७
होरी को छैल मदमातौ डौले	९६	३६
होरी खेलत श्याम भवन में	११३	४२
होरी खेलन आई	९९	३७
होरी खेलें लाल ढफ बाजैं ताल	१००	३७
हो होरी खेलन आई	१०१	३८
होरी तो का संग खेलिये	१०२	३८
हो हो कहि दौरीं	१०३	३९

खण्ड-ग	क्रम संख्या	पृष्ठ संख्या
अब जल कैसे जइये	१२१	४५
अब रितु आयौ फागुन को	१६१	५९
अरे हौं यार, लै दे झमिया	१६६	६१
अरे झगड़ौ डारौ रे कन्हैया	१७०	६३
अँचरा न सम्हारे	१२८	४८
अँखिया अब लगी पछितान	२२८	८४
अंग लिपट हँसि हा हा खाय	१७६	६६
आजु मो सो करि गयौ	२२४	८३
आजु मची श्याम रंग होरी	१५१	५६
आजु बिरज में होरी मोरे रसिया	१७५	६६
आजु बिरज में होरी रे रसिया	१६४	६०
उठि मिलि ले राम लखन आए	१३८	५१
एक सूरा गायौ	११७	४४
ए री माँ हो मटुकी गई फूटि	१४१	५२
ए महादेव ए भोला	१५९	५९
ए ढप बाजौ रे, छैल मतवारे को	१६९	६३
एरी तेरो कान्हा चटक रंग	१२४	४६
ऐसी बंशी बजा रे मोहन	१९१	७४
एक फूल फूले आधी रतियाँ	२३४	८५
एही ठैयाँ मुतिया हिरइली	२३६	८६
कोउ कछु कहो मन लागा रे	१३०	४८
कौन सों लगाये नैना	१५७	५८
कब से तुम छैल बनै रसिया	१६५	६०

काहे करत बरजोरी रे ऐसी खेलो न होरी	१८४	७०
कहाँ से लाउँ माँगे चन्दा खिलौना	१९६	७५
कोहू मारौ बिरहिया बान	१९०	७४
कहाँ से पाये दोउ नैन बहुरियाँ	१९७	७६
कपोलन कौने दियौ रे गुलाल	२०२	७७
कान्हा होरी के दिनन में	२०१	७७
कान्हा तुम करत अटपटे	११८	४४
कन्हाई माई आँखियन में	२३०	८४
केसर की परै फुहार	१३१	४९
ग्वाल तेरी गइयाँ आनि चरी	२२७	८४
गोरी लागोरी करिजवा	२१४	८०
गोरी चुनरि कुसुम रंगाइलै	२२१	८२
गिरधारी पिचकारी मेरे क्यों मारी	१६२	६०
चालौ देखिये बरसाना	१५०	५५
चलौ सखी जमुना पै	१८०	६८
चलौ अइयौ रे श्याम मोरी	२१६	८१
गगरिया धरि धरि	६१	२४
चैत मास चुनरि रंगाईदे	२४१	८८
छिटकल चैत के चंदनिया हो रामा	२४०	८७
छैल रंग डारि गयौ	२२३	८३
जब ते धौको दैकै गऔ	११९	४५
जिया जरत रहत दिन	२४३	८९
जियरा मैं बारों	१२७	४७
जा गली रे कान्हा मति	११४	४३

जा बनै न जैहों रे	१९३	७५
झूमत आवै मोहन मतवारौ	२३१	८५
तुम छकै छैल से डोलौ	१४९	५५
तेरो छैला गुपाल	१७२	६४
तेरी बेसरि को मोती	२०९	७९
तोको डारौंगी कमद चढ़ि	२१९	८२
तुम हम सों यारी कीजौ हो	१९२	७४
अलबेले लाला	१९४	७५
तुम भोरहिं आये होरी खेलन	१९९	७६
देखो भींजे न चोली	१८१	६९
देखो गोरी होरी को खिलैया	१५५	५७
नैनन में पिचकारी दई	१७१	६४
ढुलनि पे लागी रे नजरियो	२३५	८६
ढफ बाजै मेरौ यार	२६	७८
पौरि वृषभानु की	१५६	५८
पी प्याला और मगन मस्त रहौ	१८९	७४
पीरी परि गई रसिया	२०७	७९
पिया जब जइहैं विदिसवा	२३७	८६
बन बन बंसिया बजावै	२३८	८७
बन जैहो बनिके जोगनियाँ	२४२	८८
ब्रज की तोहि लाज मुकुट	१२०	४५
बालम कांकरिया मति घालो	१३२	४९
बालम बेसरिया को लटकन	१३३	४९
बाट चलत मसकै मेरौ	११६	४४

बाजि रही पैजनियाँ	१६७	६२
बेचि देउ अलबेली	१६८	६२
बहियाँ पकरि के मरौरी लला ऐसी	१८५	७१
भजु रे मन सिया रघुनंदन	२२०	८२
भीनी भीनी रात कान्हा	२१२	८०
मदमातौ रै करत मौ सो	२१०	७९
मैं तो मलौगी गुलाल	२१७	८१
मैं तो चौकि उठि ढफ	२०८	७९
मैंने तेरा बड़ा मुलाहिजा कीन्हा रे	१४३	५३
मेरी अँखियन भरत रसिया	२११	८०
मेरो मेन मुरली मधुर सुन	२०४	७८
मोहि नन्द लाल रँग डारौ	१४५	५४
मोहन रंग मत डारो	१३६	५०
मोहि मिलि गये कुँवर	११५	४३
मोहि दै दै दान	२१८	८१
मथुरा की कुंज गलिन में	१४८	५४
मेरो मन नन्द लाल सों अटको	१५८	५८
मति मारौ दृगन की चोट	१७७	६७
मृगनयनी तेरो यार नवल रसिया	१७४	६५
मेरो मन भावना आयो नहीं आली	१९५	७५
मुतिया झलकावै, धन बैठी दुलीचा	१९८	७६
मैं तो रही छै, मनाय	२३२	८५
यमुना तट श्याम खेलत	१२२	४६
यशोदा नन्द को	१७८	६७

रँग न डारौ न मो पै	१४७	५४
राज छम छम	१४०	५२
रँग डारौ न मोहन गहूँ पैयाँ	१६०	५९
री कछु पीर न जानें	२९	१२
रस लै रे रसिया फाग	२०५	७८
रसिया को नारि बनायौ री	१६३	६०
लँगरि कजरा दै बजारैं मत जइए	१३७	५१
लाउ दर्जी के अंगिया मोरी	१३४	४९
लोभी बृज राज अजहुँ नहिं आए	१३९	५१
लगत लिलार जा बेंदी	१५२	५६
लागे नेहा जनावना हो	१२३	४६
लड़ैतो नन्द को मोहि रंग में बोरे	१८३	७०
लट उलझी सुलझाउ जा रे बॉलम	२०३	७७
सैयाँ मेरे तुम जिन अबहीं मरोरौ	१५३	५७
सैयाँ मेरे बाँधो लाल गिलोलि	१५४	५७
सुनो अरजी हमारी नटवर गिरधारी	१८२	६९
सखी री को जाने पीर पराई	१८६	७२
सखी म्हारी नींद	१३५	५०
सखी मोहि फागुन मास	२२६	८३
सजन तोहि मुख देखे	२२९	८४
स्याम मोरौं चुनरी लाल रंग री	१८७	७२
सखी या घूँघट की लटक में	२००	७७
श्याम जब आवेंगे मेरी गली	२२२	८२
श्याम मुख रंग की बूंद	२२५	८३

श्याम मधुबन को हो रामा	२३९	८७
होरी खेलन आयौ श्याम आजु जाहि	१७३	६५
हो मदमातै छैयलवा नैना उनींदे तेरे	१४४	५३
होरी आई रे कान्ह ब्रज के बसिया	१७९	६८
होरी खेलत कुंवर कन्हाई चलौ सखी	१८८	७३
हो हो होरी के दिनन में मति जा स्वामी	२३३	८५
हम चाकर राधा रानी के	२१५	८१
हरि लिये रे लकुट खेले होरी	२१३	८०
हमारी तेरी नाहि बनै	१२९	४८
हो होरी आई	१२५	४७
होरी आई सब मिलेंगे	१२६	४७
होरी खेलत संत सुजान	१४२	५३
होरी चाली मेरे यार	२४४	८९

खण्ड- क

-१-

सुमंगल दाहिने होरी खेलत राम नरेश।
कौन के हाथ कनक पिचकारी, को रँग भरि-भरि देत।
रामजी के हाथ कनक पिचकारी, लछिमन भरि भरि देत।।

-२-

रँग डारौगी वाही पै जाने तौर्‌यौ है धनुक,
सुनि आई आजु नई होरी की भनक।।
करि शृंगार चलीं सब बनिता, कोऊ अबीर कोऊ अतर मलत
खेलत राम जानकी के सँग, उत आवत पिचकारी की सनक।।
एक कहै रँग डारों लखन पै, एक कहै या खिलाड़ी पै तनक।
एक उमँगे मुख मलत लाल कौ, एक हँसै दै तारी की ठनक।।
जो आनन्द मचौ मिथिलापुर, शेष शारदा बरनि ना सकत।
तुलसीदास धनि धनि राजा दशरथ, धन्य धन्य मिथिलेश जनक।।

-3-

रँगीले रंग महल में, खेलि रहे दोऊ फाग।।
दशरथ-सुत और जनक-नन्दिनी, उमँगि उमँगि अनुराग।।
भीजि गई सिय की सिर सारी, नवल लाल को पाग।
मधुर अली, तृन तोरि विलोकत, सरसत सरस सुहाग।।

–४–

बन को चले दोऊ भाई, इन्हें कोई रोकौ री माई।।
आगे आगे राम चलत है, पाछे लछिमन भाई।
ताके पीछे चलति जानकी, शोभा बरनि न जाई।।
राम बिना मोरी सूनी अयोध्या, लछिमन बिन ठकुराई।
सीया बिना मोरी सूनी रसोइया, कौन करे चतुराई।।
रिमझिम रिमझिम मेहा बरसै, पवन चलै पुरवाई।
काऊ बिरछ तन भींजत होइंगे, सीता सहित दोऊ भाई।।
लंका जीति राम घर आये, घर घर बजत बधाई।
मातु कौशल्या करति आरती, शोभा बरनि न जाई।।

–५–

श्रवण सुनत कटि जात पाप जहँ, सीताराम खेलैं होरी।।
कौन के हाथ कनक पिचकारी, को जा अबीर भरैं झोरी।।
कौन से नें यह रंग बनोयो, कौन की चूनरि रंग बोरी।।
राम के हाथ कनक पिचकारी, लछिमन अबीर भरैं झोरी।
भरत शत्रुघन रंग बनायौ, सीता की चूनरि रंग बोरी।।

-6-

आज सदा शिव खेलत होरी।।
जटा जूट में गंग विराजति, अंग विभूति रमौरी।
वाहन बैल ललाट चन्द्रमा, मृगछाला उर ओरी,
नाग गल सों लपिटौ री।।
अद्‌भुत रूप उमा लखि धाई, सँग लिये सखियाँ करोरी।
हँसि मुस्काति लजात चन्द्रमा, ठाड़ी करति बरजोरी,
मलति हर के मुख रोरी।।
गणन संग गणपति उठि धाये, लै गुलाल भरि झोरी।
लै पिचकारी षड्‌मुख डोले, घूमि घूमि चहुँ ओरी,
रंग कौ मेह बरसौ री।।
कहै 'हरि चरण' सती-शंकर कौ, को गुण बरनि सकै री।
शेष गणेश नारद अरु शारद, सबै सिद्धि इक ठौरी,
भई तिनकी मति बौरी।।

-७-

जुबनबा मद के भरे श्याम, आवेंगे कौन घरी।।
हमरी साखा सूखि रही है, किस विधि होइ हरी।।
नीर अथाह झाँझरी नैया, खेवनहार हरी।।
खेई है तो पार लगाइ दै, नहिं अब जात बही।।
सूर श्याम मोहि वेग उबारौ, धीर न जात धरी।।

-८-

आजु कैसौ बनौ ब्रजराज, छैला होरी कौ।।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, बाँधे बसन्ती पाग,
बेंदा रोरी कौ।।
लपट झपट मोरी बहियाँ मरोरी, मानत नाही गोंयार,
होड़ा-होड़ी कौ।।
वृन्दावन रस रूप माधुरी, है रसिया रिझवार,
राधा गोरी कौ।।

-९-

मानौ या न मानौ मेरी सुनौ या न सुनौ,
मैं तो तोही कों न छाड़ौंगी, अरे साँवरे।।
जामें लाज सरम की कहा बात रे, जब प्रेम के पंथ दियौ पाँव रे
याही नगर के लोग लुगाई, धरै नाम तो धरौ नाम रे।।
सासु लड़ै या ननदिया लड़ै मो सौं, रूठि क्यों न जाय
सबइ गाँव रे।
तू मत रूठै अरे मेरे प्यारे, मैं बैठी रहौंगी तेरी छाँव रे।।
अपनी मौज तेरे संग चलौंगी, पल्ला पकरि सौ-सौ दाँव रे।
अहो श्यामसुन्दर मोहि ना बिसारौ, मैं तेरी कहाय कहाँ जाउँ रे।।

-१०-

जो तुम श्याम कुबरी सो राजी, कूवरिया मैं कहाँ ते ल्याऊँ।।
कालिन्दी तें जल भरि ल्याऊँ, प्रेम सहित असनान कराऊँ।
अतर फुलेल मलौं वाके मुख सौं, घिस-घिस चन्दन खौरि लगाऊँ।।
चँदन काटि के पलँग बनाऊँ, रेशम बाननि तै बुनवाऊँ।
तोसक तकिया गिलम गेंडुआ, अगल बगल गलसुइयाँ लगाऊँ।।
कदली खम्भ विरिछ उदबुद के, बिच-बिच मौलसिरी लगवाऊँ।
नये-नये पात मँगाइ अम्ब के, द्वारे पै बन्दनवार बँधाऊँ।।

-११-

होरी आजु जरै चाँहि कालि जरै, मेरौ कुँवर कन्हाई मोहि आनि मिलै।
जब सें छाँड़ि गये मन-मोहन, चित नहिं धीर धरै।
दिन नहिं चैन रैन नहि निंदिया, रोवति राधे दोऊ करन मलै।।
बन बन व्याकुल फिरति राधिका, मन में सोच करै।
'हरि बिलास' हरि ढीठ लँगरवा, बिना श्याम मेरे कौन खिलै।।

-१२-

ऊधौ! बावरे भये हौ, बावरे भये मोरी जानि।।
ऊधौ! कौन गुपाल कहाँ कौ बासी, का सों है पहचानि।
का के कहे कौ सँदेसौ ल्याये, किन्हहि सुनावत आनि।।
गोपी! नँद कौ गुपाल गोकुल कौ बासी, वा सो है पहचानि।

वाके कहे कौ सँदेसौ ल्याये, तुमहिं सुनावत आनि।।
ऊधौ! अपनी मौज भ्रमर उड़ि बैठत, फूल महा रस जानि।
फिरि वह बेलि जरौ वा सूखौ, वाहि कहा हित हानि।।
ऊधौ! प्रथम नाद मन हरौ है मृगन कौ, राग रागिनी ठानि।
फिरि वह व्याध विवाद विबस करि, मारत है सर तानि।।
ऊधौ! पय प्यावत पूतना निपाती, ऊखल बाँधे पानि।
सूपनखा ताड़का पछारी, 'सूर' सदा यह बानि।।

-१३-

आई री ढफ बाजन लागे, माती होरी।।
माती होरी माती कन्हैया, माती राधा गोरी।।
अपने री अपने भवन तें निकसीं, कोऊ साँवरि कोऊ गोरी।।
चोया चन्दन और अरगजा, केसरि कुमकुम रोरी।।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छवि, चिर जीवहु यह जोरी।।

-१४-

बाँसुरी बन बाजि रही री।।
अधर धरी अरु मुख पै विराजति, गावति तान नई।
जो मुरली नित उठि बाजत ही, सो मुरली यह नाहिं,
नई कोऊ श्याम लई री।।
जड़ चेतन मोहे सब बृज के, मोही कुँज मही।

बछरन नीर छीर तजि दीन्हौ, तृन न चरत मृग धेनु,
धार जमुना न बही री।
जो गति भई है सकल या बृज की, सो नहिं जाति कही।
हौं निकसी ही दधि बेचन कौं, 'लेहु गुपाल गुपाल'
भूलि गई नाम दही री।।
कैसे रहौं बृज में छिपि कें, मो पै धुनि नहिं जाति सही।
निकसि चली पिय रोकन लागे, जिय की तपन बुझाय,
देह भई कृष्णमई री।।

-१५-

ननदुलि बैर परी, आजु होरी कौ त्यौहार।।
गारी गावत, अबीर उड़ावत, आये ललन मेरे द्वार।।
मो पै रह यौ नहिं जात मँदिर में, सुनि ढफ की झनकार।।
देखन दै मुख श्याम सुन्दर कौ, खोलि दै बजुर किवार।।

-१६-

आना रे हमारी, श्याम गलियाँ।।
मैं तो चुनि चुनि फुलवनि सेज, बिछाऊँगी कलियाँ।।
होरी कैसौ औसर, पिय नाही दूसर,
जुबना जनाय रह्यौ जोर, सुनौ याही बिरियाँ।।
होरी खिलाऊँ मैं तुमहिं रिझाऊँ,
अंचरनि ढोरोंगी ब्यारि, खवाऊँ पान बिरियाँ।।

-१७-

मनमोहिनी रिझावरि री, तेरे नैन स

तू अलबेली कौन गाँव की, अब ही है

ऐसों की होरी तेरे बगर में, नित नये कौ

सौंह खवाय कहत भटू मोसौं, पग नहिं प

'दयासखी' या बृज में बसि के, नेह निभा

-१८-

घूँघट कौन करै, नैना मद सो छके

भरि भरि लावै, मोही पै गिरावै, करि डारी

वृन्दावन की कुँज गलिन में, रंग की प

-१८-(क)

मैं तो जानति नाहीं वाकौ नाम

मेरी बहियाँ पकरि लीन्ही थाम

श्याम-बरन, बरनत न बनत म

मनहुँ कोटि छवि सिन्धु धाम

मंद हँसनि, दामिनी सी दसन-

पीत वसन ओढ़ें ललाम।।

कर, मुरली उर में वनमाला,

-१९-

मालिनी मैं ना बसन्त बँधाऊँ, मेरौ पिया

जिनके पिया नित घर ही बसत हैं, उनहीं के

तीज-त्यौहार घर ही के नीके, मेरे पिया

-२०-

ऐसे कहाँ मेरे भाग, पिया संग खेलौं

काऊ सौत संग खेलत हुइ हैं, पिया रंग भ

अपनी बिथा का सौं कहौं सजनी, भाग भ

पिया संग खेलैं जो होरी।।

जबसे पिया परदेस गमन कियौ, सुधि हू

मैं बैठी यह सगुन विचारों, कब आवै

पिया संग खेलौं मैं होरी।।

-21-

बन बोलि कोइलिया शोर करै, पिया पिया पपै

आम फुले महुआ गदराने, अँगिया में जो

बीते बसन्त कन्त नहिं आये, मैं केहि के स

सब सखि पिय संग होरी खिलति हैं, भोर कंत

–२२–

आजु बसन्त बना बनि आयौ।।
कोऊ सखी ओढ़ैं चीर बसन्ती, काऊ ने सालू रँगायौ।
कोऊ सखी डारि गरे बिच सेली, रूप अनूप बनायौ,
भेष जोगिनी को दिखायौ।।
चन्द्रावलि पै चीर बसन्ती, ललिता ने सालू रँगायौ।
राधे डारि गरे बिच सेली, रूप अनूप बनायौ,
भेष जोगिनी कौ दिखायौ।।

–२३–

तू बड़ भाग सुहाग भरी, ब्रजराज तेरे घर आवत है री।।
जो कबहूँ तू मान करै, बहियाँ गहि तोहि मनावत है री।।
तोहि रिझाइ भली विधि सों, मुरली मे तेरी जस गावत है री।।
जो कबहूँ तू बन कों चलैं, पाछे सें तेरे उठि धावत है री।
तोहि लै बन में रास करै, मन झारत फूल बिछावत है री।
सारद सेस महेश रटैं, चतुरानन ध्यान न आवत है री।
सोई अब 'सूर' भयौ बस तेरे, महावर पाँय लगावत है री।

–२४–

होरी कौ लंगर नहिं आयौ ननदिया, अबीर–गुलाल के बादर छाये,
केसरि रंग बरसायो ननदिया, आवन कहि गये,
अजहू नहि आये, भरि जोवन तरसायो ननदिया।

–२५–

अब तो सखी फागुन ऋतु आयौ, ढफ गोपाल बजावै।।
केसरि अबीर गुलाल मलै, मुख, मोहि नँदलाल बुलावै।।
खेलौं फाग श्याम सँग सजनी, जोर मनोज जनावै।।
जों लों वाकौ मुख नहिं देखों, जिय मेरौ ललचावै।
एक तौ डर मोहि सासु ननद कौ, दूजै लाज लजावै।।
मुरली में लैं नाम हमारौ, हरि विलास नित गावै।

–२६–

कहा बानि परी सैयाँ तोरी रे, मोसों खेलन आयो होरी।।
हम सों श्याम होरी बनि खेलत, और सखिन सों थोरी।।
अबीर गुलाल के थार भरे हैं, मुख मसलन कों रोरी।।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छवि, चिर जीवहु यह जोरी।।

–२७–

अँखियन भरत अबीर, बीर मोरी पीर न जानै।।
हार तोरि गलगुँज मरोरी, लै अबीर मुख सानै।।
रोके सैं औरहु उरझत है, लै पिचकारी तानैं।।
'ललित किशोरी' बरजत हारी, नंदनँदन नहिं मानैं।।

–२८–

कान्हा तुमहीं का ब्रज के इजारदार, मोपैरँग छिरकत पिय बार-बार।
रँग छिरकत मेरे कुमकुम मारत, मलत गुलाल पट टार-टार।
कर मेरौ पकरि कलाई मेरी मसकी, अंगिया के करि दीन्है तार तार।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, होरी मचावत द्वार-द्वार।

–२९–

री! कछु पीर न जानै, अँखियन भरत अबीर।
मुरकावत मेरी नरम कलइयाँ, खैंचत धरि धरि चीर।।
भरि पिचकारी मुख पर मारत, अरु मारै दृग तीर।
'मोहनदास' कहाँ लगि बरजौं, आखिर जाति अहीर।।

–३०–

लाल मोरी अँखियन करकै, एसौ न फेंकौ गुलाल हो।।
हम बोलति हितके चित सों तुम, ता पै करत यह हाल हो।।
बाट चलत घूँघट पट खोलत, रोरी मलत लै गाल हो।।
'रामप्रताप' हँसति मुख मेरौ, हेरि हेरि ब्रजबाल हो।।

–३१–

मैं तो लाज की मारी न मटकी, सँवरिया ने सिर की मटुकी मेरी पटकी।।
मैं जमुना जल भरन जाति, मेरी सासु ननद मोहि हटकी।
आवत देखि रसिक नँदनदन, सँग की सखी सब सटकी।।
मैं तो लाजि रही छिपि छिपि, अनबोलें चुनरि मोरी झटकी।
हाल बिहाल करो नँदनन्दन, भूलि गई घट घट की।।
तोरौ हरा दुलरी तिलरी मेरी, करकी चुरी सब करकी।।
कंचुकि फारि मरोरि दोऊ कुच, यहै बात मोहि खटकी।।

-३२-

मेरी बहियाँ पकरि लीन्ही थाम थाम,
मैं तो जानति नाहीं वाकौ नाम गाम।।
श्याम-बरन, बरनत न बनत मौपे,
मनहुँ कोटि छवि सिन्धु धाम।।
मँद हँसनि, दामिनी सी दसन-दुति,
पीत वसन ओढ़े ललाम।।
कर मुरली, उर में वनमाला,
सीस मुकुट अनमोल दाम।।

-३३-

होरी शंकर खेलें नगर में, बारे मितवा तू कर लै बहार।।
अरी ए री, देखो बे गइ मोहन बे गए, और पहुँचे है नदिया के पार।।
आपुन पार उतरि गये, और हमको छोड़ौ मंझधार।।
गौरी तौ पोंढ़ी पलंग पै, और मुख पै डारें रूमाल।
जाउ लला घर आपने, यहाँ नहीं है मिलिबे कौ दाँव।।

-३४-

आजु श्याम के मैं अंक लगौंगी, कलंक लगै तो लगै री।।
जरि बरि जाय आनि सब कुल की, लाज निगौड़ी भगौ तौ भगौ री।।
सुनियो री मेरी पार- परौसिन, तुम उपहास करौ तो करौ री।।
'दयासखी' होरी खेलौंगी उन संग, तोप दगौ तौ भले ही दगौ री।।

-३५-

डगर मौरी छाँड़ौ श्याम, विधि जावौगे नैनन में।
भूलि जाउगे सब चतुराई, मारौंगी सैनन में।।
जो तेरे मन में होरी खेलन की, तो लै चालि कुंजनि में।।
चोया चन्दन और अरगजा, छिरकौंगी फागुन में।।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, लागी है तन मन में।।

-३६-

हमें घर जान दै, नई होरी के खिलैया रे।।
इलरी दुलरी और पचलरी, बाजूबँद के गुहैया रे।।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, बंसी के बजैया रे।।

-३७-

ऐसौ रँग न डारौ मोपै सुघर श्याम, मेरो बार बार तोको है प्रनाम।।
मैं इत की नहीं बरसाने गाँव, वृषभानु सुता मेरौ राधा नाम।।
कहे 'भारतंड' अब भई है शाम, मोहि जान दै मेरौ दूरि गाम।।

-३८-

लला हो रँग की चोट मेरे भारी लगै, पिचकारिन काहे को मारी।।
भींजि गयौ मेरौ चीर चादरा, भींजि गई तन सारी।।
घर जैहौं तौ सासु रिसैहै, ननद सुनै देइ गारी।।
सैयाँ सुनै सतराय साँवरे, सँग की हँसे दै तारी।।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छवि, तुम जीते हम हारी।।

-३९-

बाट चलत या अनौखे लला, रँग चूनरि बोरि दई।।
अब कैसे घर जाऊँ सखी री, यह गति मोरी भई।।
मैं जल जमुना भरन जाति, मोहि औचक घेरि लई।।
'रामप्रताप' लाज बृज में दइया, सब मोरी आज गई।

-४०-

सखी री! या बृज में अब कैसें बसैं, अनरीति न जाति सही।।
गैल चलत या छैल ननद के, बहियाँ आनि गही।।
मलि गुलाल मुख रंग भिंजोई, सौ सौ बात कही।।
'नारायण' मग लोग हँसें सब, आजु न लाज रही।।

-४१-

पालागौं कर जोरी, श्याम मोसों खेलौ न होरी।।
गउएँ चरावन कों हम निकसीं, सासु ननद की चोरी।।
सिगरी चूनरि मोरी रँग में न बोरौ, एती अरज सुनौ मोरी।।
छीनि झपटि मोरे हाथ सों गागरि, जोर सों बहियाँ मरोरी।।
जिय धड़कत मोरी साँस चलति है, देह कँपै गोरी गोरी।।
अबीर गुलाल लपटि रह्यौ मुखसों, सारी रंग में बोरी।
सासु हजारन गारी देयगी, बलमा जियत न छोरी।।
फाग खेलिकैं तुम मनमोहन, का गति कीन्हीं मोरी।।
सखियनि बिच बाबा दंन के द्वारें, होयगी मोरीं तोरी।।

–४२–

बेदरदी काढ़ि दै, मेरी अँखियन करकै गुलाल।।
सुरझावन दै उरझी मोहन, बेसरि सों बनमाल।।
अतिही अधीर पीर नहिं जानत, मलत अबीरहिं गाल।
'ललित किशोरी' रंग कमोरी, ढ़ारत निठुर गोपाल।।

–४३–

होरी खेलत मेरौ मुख मति मीजौ, चेरी मैं तेरी भई रे भई रे।।
बहियाँ मरोरी श्याम बिहारी, आनि बानि सब गई रे गई रे।।
उन मलि डारे बारे जुबनवा, कैसी करौं हा दई रे दई रे।।
आगि लगो ऐसी होरी खेलन में, गलियाँ दिखावै नई रे नई रे।।
मेरी तौ उन्हीं सो लगन लगी है, जिन मेरी बारे सो बहियाँ गही रे।।

–४४–

होरी खेलन कैसे जाऊँ सखी री, हरि के हाथ पिचकारी लखति है
और की सारी कुसुम रँग बोरत, हमरी चुनरि रतनारि रँगत है।
होरी के खिलैया सम्हरि होरी खेलौ, या ब्रज में राधा प्यारी बसति है।

–४५–

मदमातौ छैल ठाढ़ौ रोकै गैल, कैसे जाऊँ री सखी
आज पनियाँ भरन।
मुकुट की लटक चटक पीरे पटकी, माधुरी मूरति

सोहै श्याम बरन।
अबीर गुलाल के बादर छाये,
पिचकारिन रँग लागै परन।।
बाजत ताल मृदंग झॉझ ढफ,
रहौ ना जाय सुनि ढफ की धरन।
बलि बलि जात 'जनार्दन' प्रभु की,
बसौ सदा हिय मेरे चरन।।

-४६-

चहुँ ओर नदिया रंग सों भरी, निकसन कों डगर ना रही।।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच मे जमुना बही।
हमरे संग की पार उतरि गयीं, हम ही अकेली रहीं।।
आपुन तो हरि पार उतरि गए, हम सों कछु न कही।।
जानकीदास रूप रस माते, मन आवै सो सही।।

-४७-

जुवनवा बैरी भये, कैसे दधि बेचन ब्रज जाऊँ।
अति उतंग छतियन पर झलकत, कैसे इनहिं छिपाऊँ।।
देखत ही वह दौरि परैगो, मोहन वाकौ है नाऊँ।
अब नहिं आन उपाउ सखी री तजिये गोकुल गाँऊँ।।

–४८–

मति जाउरी आजु कोऊ पनियाँ भरन, मग रोकत ढोटा श्याम बरन
डारत रंग भिजोवत अंबर, मटुकी फोरत बीच धरन।
मलत गुलाल हार गल टोरत, डर लागत मोहिं कंत डरन।।
ग्वाल बाल सँग भीर सखीरी, आगें परत नहिं मेरौ चरन।
फागुन भरि कोऊ जाउ कहूँ मति, बैठि रहौ सब अपने धरन।।
झगरत लरत डरत ना नैकहु, कासों कहों को सुनै श्रवनन्।
हरिबिलास हरि ढीठ लँगरवा, सबसों लगै लँगराई करन।।

–४९–

ब्रज में खिलन मति जाऊ, तुम पै कोऊ रँग डारि दैहै
ये ब्रजवासी बड़े उतपाती, मारग में इठलैहें।
तिनके संग है जैहौ बावरी, गोकुल जान न देहैं।।
ग्वाल बाल सब मद के री माते, चहुँ दिसि सें घिरि ऐहैं।
इक इक रँग सौ सौ पिचकारी, तुम्हरेहि सीस चढ़ै है।।
इतनौ कहौ मेरी मानौ दुलहिया, फिरि पाछैं पछितै हैं।
'भूदरदास' श्याम मिलि जैहैं, नैन सों नैन मिलै हैं।।

–५०–

चली चलि यों ही बकै दैया मारौ, होरी खेलै श्याम बंशी वारौ।।
मैं जमुना जल भरन जाति, भरि मूठ गुलाल की मारौ।
ता दिन सों दूखति मेरी अँखियाँ, नैक न जात निहारौ।।
फागुन के दिन चार सखी, मन में एक मंत्र विचारौ।
दैहों बताय तबहिं घनश्यामहिं, होत सखिन सों न्यारौ।।

–५१–

जा सों बिन होरी खेलैं न जाऊँगी,
जाने मेरी चुलिया की कीन्ही है कैसी कुगति।।
मटकि मटकि भोहैं मटकावै, और दृगन के भाव बतावै।
ताहू पै अति मृदु मुसकावै, याही भाँति सारे जग कों ठगत।।
जो लौं सखी बदलौ न चुकाऊँ,
तौ लौ सखीं अन्न जल नहिं पाऊँ।
ऐसे लँगर कों नाच नाचाऊँ, देखै तमासौ सारौ जगत।
जौ इततें उतमें उऐ भानू, तौ याकी पगिया में रंग में सानू।
'नारायण' जाकी एक न मानूँ, ऐसौ कहा हमारौ बाप लगत।।

–५२–

साजि कैं जो चलीं, रँगीली खेलन होरी।।
करि सिंगार माँग मुतियन भरि, साथि चली सुधरी।
नैनन अंजन आँजि के, मानों बाढ़ि सिरोही धरी।
सासु बुरी घर ननद हठीली, सैयाँ ने गारी दई।
तू मदमाती फिरति ग्वालिनी, कुंजन काहे गयी।।
मैं जमुना जल भरन जाति ही, मोहन घेरि लयी।
अबकी फाग प्रिय तेरे सँग खेलौं, यह अभिलाष रही।।

–५३–

होरी हो ब्रज राज दुलारे।।
बहुत दिननि तें तुम मनमोहन, फाग ही फाग पुकारे।
आज देखियो सैर फाग की, पिचकारिन के फुहारे,
चलें जहाँ कुमकुम न्यारे।।
अब क्यों जाय छिपे जननी ढिंग, औ द्वै बापनि वारे।
कै तौ निकसि कें हो होरी खेलौ, कै मुख सों कहौ हारे,
जोरि कर आगें हमारे।।
निपटि अनीति उठाई है मोहन, रोकत गैल गलारे।
'नारायण' तब जानि परैगी, आवौगे द्वारें हमारे,
संग सब ग्वाल सखा रे।।

-५४-

रँग डारें मोहन हम पै भागो न जाय,
कोऊ लीजौ डगरिया धेरि री।।
चौवा भी लइयो चँदन घिसि लइयो,
कोऊ लइयो केसरि रँग घोरि री।
वृन्दावन की कुँज गलिन में,
कोऊ दीजो दुहइया फेरि री।।

-५५-

बनि आई हैं चातुर नारि, होरी रंग भरी।।
सूआ सारी घेरि घाँघरौ, अंजन बेंदी भाल, रोरी आड़ दिएँ।।
मुतियन की लर यों लटकति है, लट नागिन डसि जाय,
चोटी पीठि परी।।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, अरु बाजत करताल, नाचैं इन्द्रपरी।।
अबीर गुलाल के बादर छाये,
रंग की परत फुहार, भीजैं कृष्ण हरी।।

-५६-

श्यामा श्याम सों होरी खेलत आजु नई।।
इनको नीलाम्बर उनको पीताम्बर बीच में गाँठि दई।
नन्दनंदन कों राधे कीन्हों, माधव आपु भई।।

सखीं सखा भए, सखा सखी भईं, जसुमति भवन गईं।
गोरे श्याम साँवरी राधा, यह मूरति चितई।
पलटौ रूप देखि माधव कौ, जसुमति चकित भई।
बाजत ताल मृदंग झाँस ढप, नाचत हैं थेईं-थेईं।
'सूर' श्याम कौ वदन विलोकत, उघरि गई कलई।।

-५७-

आजु नगर में धूम मची है, हो होरी खेलत कुंवर कन्हाय।
उठति कींच मग बीच वृन्दावन, नील पीतपट रहे हैं चुचाय।।
बैनी झुकीं, अलक की झलकनि, मानो मेघ रहे झर लाय।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, वीना रबाब बाजै और शहनाय।
चंग उपंग खंजरी महुअरि , नुपूर धुनि सुनि नगर सिहाय।
चातक मोरि कोकिला बोले, दादुर बोले हैं मदन जगाय।
ऋतु बसन्त फूले बन उपवन, द्रुम द्रुम लता रही लपिटाय।।
इन्द्र कुबेर वरुण सनकादिक रवि-रथ ससि रथ चल न सकाय।
जोगी जती तपी मुनि ग्यानी, उनहूँ के जोग रहे विसराय।।
जल थल थकित सभी गग डोलैं, पंथिन के पंथ भुलाय।
गोपी ग्वाल बाज सब खेलें, शिव विरांचि गति रही लुभाय।।
सारद सेस महेश बखानत, उनहूँ पै हरि गति जानि न जाय।
चिरजीवौ ब्रजराजा साँवरे 'सूर' विमल इतनौ जस गाय।।

–५८–

ननदिया मोहि ना सतावौ, मैं तो विरहा की मारी मरी।
ससुर हमारे असिय बरस के, सासु हमारी वारी।
सैयां हमारे पलना झुलत हैं, हम ही झुलावन हारी।।
बरियो या बँभना बरियो वा नऊआ, जिन मेरी लगुन चढ़ाई।
माई बाप सब अपनी गरज के, को जानें पीर पराई।।

–५९–

लाल ही लाल भये, होरी खेलि रहे नन्दलाल।
लाल लली ललकारि दुहूँ दिसि, उड़ि रहे लाल गुलाल।
वे उनके कंचुकि तकि मारत, वे तकि मारत गाल।।
लाल भयौ सिर पेच लाल कौ, पट जामा भये लाल।
दल समेत भयीं लाल लाड़िली, लालन के गल माल।।
लाल भयी छिति गगन लाल भये, ससि उडुगन भये लाल।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, रवि मंडल भयौ लाल।।
लाल लाल सब ग्वाल बाल भये, ब्रजवासी भये लाल।
लालन ललित लाल लखि लाला, पल फेरत भये लाल।।

–६०–

नई रे नारि नव जोवन वारी, झूमति गागरि लै चली।।
सिर पर घड़ा घड़े पर झारी, मोहक जोवन दै चली।
एक हाथ अबीर दूजै हाथ रोरी, रंग उड़ावत लै चली।।

-६१-

गगरिया घर धरि आऊँ तौ लौं ठाढ़े रहियो माखनयार।।
गगरी मैं धरि आऊँ चुनरी ओढ़ि, आऊँ करि आऊँ सोलह सिंगार।।
मिस्सी लगाय आऊँ टीका बेदी करि आऊँ,
भरि आऊँ मुतियन माँग।।

-६२-

घोल री मो पै रंग की घोला घोल, सासु सुनै देयगी बोल री।।
तास की अँगिया गुलाब की चुनरी, और धनुष की कोर।
रेशम बंद लगे अति सुन्दर, ता बिच परी है झोल री।।
जानि गई सब संग की सयानी, मिलना किस विधि होय।
'समद' पिया सौं यौं जाय कहियो, कौन करे याकौ मोल री।।

-६३-

कान्हा रे बरजि हारी तुमको।
तुम तौ अपनी गरज के हौ यार, दरद नाहीं तुमको।।
होरी खेलन कौं, आई राधा प्यारी,
ज्यौं बादर की है लरज, गरजि रही बरसौं।।
अबीर गुलाल के बादर छाये,
पिचकारिन भई सर, जरद भई रंग सों।।
हमको जोग भोग कुबजा कों,
होरी खेली सौतिनियाँ के संग, सरम नाहीं तुमकौं।।

–६४–

लगि जायगी मेरे चुभि जायगी, मति मारौ मेरे लगि जायेगी।।
काँट कँटीली गुलाब की छरियाँ, गोरे बदन मेरे चुभि जायेगी।।
बेदरदा मेरो दरद न जानै, तास की अँगिया मसकि जायगी।।

–६५–

ऐसी चुतर ब्रज नारि, रंग में है रही बोरी।।
एक मन उड़त गुलाल, सवा मन केसरि घोरी।।
राधे पै छिरकत श्याम, स्याम पै राधा गोरी।।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, श्याम मिलि गावत होरी
राधा चली मुख मोरि, श्याम मोरी बहियाँ मरोरी।।

–६६–

आयौ बसन्त कहौ, उन हरि सौं, बोरे अंब बन फूली सरसौं।।
फूले कमल उमगे दोउ जुबना, अजहुँ न भेंट भई उन हरिसौं।।
औरन सौं वे हँसत खेलत हैं, हम तरसें वाके दरसन बरसों।।
ऐसौ मन होय, छुड़ाय लाऊँ सजनी, मोहन प्यारे को कुबजा के करसों।।
राह चलत दुर्लभ भयौ सजनी, अजहुँ न भेंट भई उन हरिसौ।।

–६७–

गारी दई और कांकर मारौ, अब कैसे घर जाउगे लला।।
कांकर मारि गली भयौ ठाड़ौ, अबकैं बदलौ मैं लेऊँगी लला।।
छीनि लेऊँ तेरी लकुट मुरलिया, तबतौ नाहिं इठिलाउगे लला।।

–६८–

ऐसौ चटक रंग डारो कन्हैया, मोरी चुनरी में परि गयो दागरी।
ग्वाल बाल मोहि चहुँ दिसि घेरैं, केहि मग जाऊँ मैं भाग री।।
अबीर गुलाल लिये भरि झोरी, हम सौं मचायौ है फाग री।।
'भूधरदास' श्याम मिलि जेहैं, हरि के चरन चित लाग री।।

–६९–

काहे गुलाल सैयाँ हम पै डारौ, रंग सें चटक अँग रँग ही हमारौ।।
आवौ पिया मुख देखै सेज पै, मुख जैसे चन्द्र जोबन जैसें तारौ।
सिसकि सिसकि मेरौ मन बस करि लीनौं, अब क्यों न अँचरा उघारौ।।
'कृष्णानंद' लागि उर मेरे, आनन्द-केलि-कला बिस्तारौ।।

–७०–

अबकी होरी मैं खेलौंगी डटिकैं, जो श्याम आवैं बिरज में पलटिकैं।।
जो श्याम मोसों बरजोरी करिहैं, गारी मैं देऊँगी घुँघटा पलिटकै।
एक कुमकुमा ऐसौ मैं मारूँ, जो बंसीवारे की आँखिन करकै।।
जो श्याम हमसों रूठि जायेंगे, बिनती करौंगी मैं पैयाँ पकरि कै।।

–७१–

पिया कौ मनाय लाऊँ पैयाँ परौंगी मैं, धरौंगी जोगिनियाँ को भेस री।।
गेरुआ बसन भसम तन लाऊँ, सीस बढ़ाऊँ लम्बे केस री।।
पिया बिन हिया मेरौ मानत नाहीं, ढूँढ़ौ नगर परदेस री।।
गावे 'गुदर' पिया अपनौ मैं पाऊँ, सतगुरु दियौ उपदेस री।।

-७२-

नेह लग्यौ मेरो स्याम सुँदर सौं।।
आयौ बसन्त सबइ बन फूले, खेतन फूली है सरसों।
हम पियरी भई श्याम-विरह में, निकसत प्रान अधर सों,
कहौ कोऊ बंसीधर सों।।
फागुन में सब होरी खेलति हैं, अपने री अपने वर सों।
पिय के विरह जोगिनि है, निकसीं, धूरि उड़वति कर सों,
चली मथुरा की डगर सों।।
ऊधौ जाय द्वारिका में कहियो, इतनी अरज मेरी हरि सों
विरह-बिथा सौं जियरा जरत है, जब से गये हरि घर सों
दरस देखन कौं तरसौ।।
'सूरश्याम' की यह बीनती कृपासिन्धु गिरिधर सों।
गहरी नदिया नाव पुरानी, पार करौ सागर सों,
अरज मेरी राधावर सों।।

-७३-

सारे जग में होरी या ब्रज में होरा।।
देखो सखा कैसा ये देश निगोड़ा।।
मैं जमुना जल भरन जात ही, देख बदन मेरा गोरा।
मोसों कहत चलौ कुंजन में, नेंक नेंक से छोरा, परै अँखियन में डोरा।।
जियरा देखि डरानौ री सजनी, लाज शरम की ओरा।
क्या बूढ़े क्या लोग लुगाई, एक सैं एक ठिठोरा,
काहू सौं काहू कौ जोरा।।
निपट निडर नन्द कौ री सजनी, चलत लगावत चोरा।
कहत 'गुमान' सिखाय सरवन मेरौ, सगरौ अंग टटोरा,
न मानत करय निहोरा।।

–७४–

आज दधि बेचन मैं ना जाऊँगी, वृन्दावन नटवर करत रारि।।
उड़त गुलाल लाल भये लोचन, भरि पिचकारी मारें भव मोचन,
खेलें बिन खेलें बिन कल ना परत।।
डगर चलत मोरी सिर की गगर फोरी, सारी चूनर मोरी रंग में बोरी,
'सनद पिया' मैं तो गई री हार।।

–७५–

गारी न दै जसुदा के लला, होरी खेलन आए हौ तौ खेलौ भला।।
गारी देउगे गारी खाउगे, एक की लाख सुनौगे भला।।
नंद जसोदा सहित बिकैहौ, जो गिरि जाय मेरे कर कौ छला।।
जो तुम चाहो भलाई कन्हाई, अपनी डगर चले जाउ भला।।

–७६–

जिनि जाउ री आजु कोऊ पनियाँ भरन,
ठाड़ौ मग में कान्ह मारत पिचकारी तकि तकि।।
मैं तो बगदि आई दूरि सों लखि कें, पट घूँघट की ओट करि करि।
सीस घुमन लागौ पिंडुरी कँपन लागीं, हियरा करन लागौ न्यारौ धक धक।।
जाय चाहै ताकौ मन बस करि लेय, तारी बजावै गारी बकि बकि।।
जौ लौं फागुन यही ढँग रहिहै, बैठि रहेंगी ब्रजनारी थकि-थकि।।

–७७–

मत मारौ पिचकारी श्याम! अब देंउगी मैं गारी।।
भीजैंगी लाल नई मोरी अँगिया, चूनरि बिगरैगी सारी।
देखैगी सासु रिसावैगी मो पै, सँग की सखी सब न्यारी,
हँसैंगी दै दै तारी।
हाट बाट सबसों अटकत हौ, लै लै रारि उधारी।
कहाँ लौं तेरी कुचालि कहौ मैं, एक एक ब्रज नारी,
जानति करतूति तिहारी।।
मूठि गुलाल न मारौ दृगन में, दूखैगी आँखि हमारी।
'नारायण' न बहुत इतराऔ, छाँड़ौ डगर गिरिधारी,
अनौखे तुमही खिलारी।।

–७८–

गोरी होरी खेलन कों आयौ श्याम, जापै रंग क्यों न डारौ री।।
राम वही जानें रावण मार्‌यौ, जानें कंस पछारौ री।
खंभ फारि हिरनाकुस मार्‌यौ, जानें नखनि बिदारौ री।।
वामन ह्वै राजा बलि कौं छलौ, जानें गजकों उबारौ री।।
'सूरश्याम' यह बड़ौ ही खिलाड़ी, जाकों मति जानौ बारौ री।।

-७९-

अबीर मलौंगी कपोल तिहारे, जसुदा लाल ब्रजराज दुलारे।।
यह रितु फागुन छाय रही है, छैल छबीले हो प्रान पियारे।।
रैन जगाय लेहु रंग रसिया, जो पिय आये हौ द्वार हमारे।।
'ख्यालखुसाल' भरे मन मोहन, जोवन उमँगि- उमँगि उमँगा रे।।

-८०-

यह दिन चार बहार री, पिय सों मिलि गोरी।।
फिर कित तू, कित पिय किन फागुन, यह जिय माँझ बिचार।।
जोबन रूप नदी बहती यह, लै किन पाँव पखार।।
'हरिचँद' मति चूक समय तू, कर सुख सौं त्यौहार।।

-८१-

नाथ मेरा क्या बिगड़ेगा, जायगी लाज तुम्हारी।।
तुम तौ दीनानाथ कहावत, मैं अति दीन दुखारी।।
जैसे जल बिन मीन मरति है, सोइ गति भई है हमारी।।
भूमि-विहीन पांडु सुत डोलैं, धरणि धरम-सुत हारी।
रही न पैज प्रबल पारथ की, भीम गदा महि डारी।।
सूर-समूह सब मिल बैठे, बड़े-बड़े व्रत धारी।।
भीषम करण द्रोण दु:शासन, जिन मेरी अपति बिचारी।।
मो पति पाँच पाँच के तुम पति, सो पति कहाँ बिसारी।।
'सूर' स्याम पीछें पछितैहौ, जब मोहि देखौ उधारी।।

-८२-

मेरा मन मोहना बंशीवाला,

ऐसी मार गया पिचकारी, भीज गई सारी दूर भया ठाड़ा।।

ऐसा ढीट लंगर नहिं मानत डर, वो तो करत अपनी मोज,

होरी खेलत नन्द का लाला।।

होरी खेलत जा दूर निकस जा, वो तो नहिं मानत दई मारा।।

-८३-

छाप तिलक सब छीनी, मोसों नैना मिलाय के।।

प्रेम भटी की मदिरा पिला के, मोहि मतवाली कीनी।।

बलि बलि जैहों मैं तोरे रंगरेजवा, अपनी सी रंग दीनी।।

गोरी गोरी बहियाँ हरी हरी चुरियाँ, बाँह पकड़ गहि लीनी।।

'खुसरो निजाम' के बलि बलि जइये, मोंहि सुहागिन कीनी।।

-८४-

मैं तो याही छैल सों हारी, मारत मोरे नैननि में पिचकारी।।

घर मेरौ दूर गगरि सिर भारी, मैं नाजुक पनिहारी।।

तकि तकि गेंद कुचन पर मारत, ऐसा ढीठ खिलारी।।

सिर पर घड़ा घड़े पर झारी, चाल चलत मतवारी।।

'तनसुख' के प्रभु जानि अकेली, सराबोर करि डारी।।

-८५-

अब कुबजा सों प्रीति करी, हेरी यदुकुल लाज गँवाये नाथ।।
कंस की चेरी रूप सों हीनी, मन में कपट भरी।।
सो मोहन पटरानी कीन्हीं, निज मरजाद हरी
जाय बिके हरि दासी हाथ।।
जब से ब्रज त्यागौ जदुनायक, चितवत गैल खड़ी।
उड़गन गिनत सति सब बीती, रैन-चैन सिगरी
मौन बिथा नित तन के साथ।।
बीती अवधि विकल सब, पीर देह सिगरी
'हरिबिलास' हरि सों जाय कहियो, जुग जुग जात घरी,
विनय करूँ पद नाथ माथ।।

-८६-

आज सखी प्रीतम पाऊँ, तौ अपने बड़ भाग मनाऊँ।।
साँवरी सूरति नयन विशाला, चन्द्रबदन गल मुतियन-माला।।
रूप मनोहर चालि मराला, सुन्दरता पै बलि-बलि जाऊँ।।
जो प्यारौ इन गलियन आवै, मो बिरहिन कों दरस दिखावै।।
बैठि निकट मृदु-वचन सुनावै, मैं उनकों हँसि कंठ लगाऊँ।।
'नारायण' गिरिवर गिरिधारी, कब लैहें सुधि आनि हमारी।।
जब वे मोसों कहेंगे प्यारी, तो मैं फूली अँग न समाऊँ।।

-८७-

मन लै गयौ आजु कन्हैया, लख्यौ पनियाँ भरत मैंने जमुना के तट।।
लै गागरि घर सों जु चली, पग डगमग परत मही।
बोरी सी मैं फिरति तबही सों, जानैं गति कौन भई,
मन अटक्यौ वा मुकुट की लटक।।
कल न परति तबही सों सखी मोरी, नैनन लाज गई।
कासौं कहौं मैं बिथा जिय की, बा मोहन मोहि लई
ऐसी लगी चित कौ है चटक।।
नटवर भेष काछनी काछें, सो छबि दृगनि छई।
'राम प्रताप' बिसरति नहिं पल छिन, नित प्रति होति नई,
ता पै छाजै भृकुटी की लटक।।

-८८-

श्याम होरी खेलन हमसों न आवै, जासों कहियो पलटि घर जावै।।
ऐसिन की परतीति कहा है, कपट की बात बनावै।।
भीतर चरन की परतीति कहा है, कपट की बात बनावै।।
भीतर चरन धरन नहिं, दीजो चाहें जितौ ललचावै।।
वृन्दावन की कुँज गलिन में, जित चाहें तित जावै।
'नारायण' एक मेरौ भवन तजि, अन्त चहें कहुँ जावै।।

-८९

मेरौ अब कैसें निकसन होइ री गुइयाँ, होरी खेलत कन्हैया।।
ससुरें जाऊँ तौ सासु लड़ति है, मइकै जाऊँ भौजैया।।
इत डर उत डर मोहि सखी री, बीच में नचत कन्हैया।।
सारी भिजोई मेरी चुनरी भिंजोई, और भिंजोई पीरी पागरिया।।
नन्दलाला को मैं का करि भिजऊँ और भिंजोई पीरी पागरिया।।
नन्दलाला कों मैं का करि भिंजऊँ, ओढ़ि आयौ कारी कामरिया।।

–९०–

मन मतवाला जपूँ कैसे माला।
ज्ञान गुदरी के दस दरवाजे, आखिर की खिड़की में पड़ गया ताला।।
नहाइ धोइ आसन पर बैठी, भ्रमर जाल में हाल बेहाला।।
यह चंचल मन बस नहि मेरे, मेरी समझ में जम गया पाला।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, दरशन दीजै मोहि दीन दयाला।।

–९१–

सखि कछु जतन करौरी, स्याम पनघट अटक्यौ री।।
उठि प्रभात घट लै जमुना तट, भरि कर नीर धरौ री।।
झपट लपट झटपट चट नटखट, गहि गहि दै पटकौ री,
बहुरि हँसि दृग मटकौ री।।
आई अब होरी रँग बोरी, मेरे जिय खटकौ री।।
ना जानूँ 'किंकर' का करि है, मेरे हित हटकौ री,
चूनर रँग चटकौ री।।

–९२–

निर्दयी संग खेली होली, श्याम मोसौं करौ न ठिठोली।।
अबीर गुलाल कौ रंग बुरौ नहीं, केसर कुमकुम रोरी।।
काजर तेल मिलाय मलौ मुख ताऊ पै भरि कैं कटोरी,
बिगरि गई सूरति मोरी।।
देखि कैं सूरति कौन कहैगो, मोहि व्रषभान किशोरी।
संग की सहेली सब देखि हँसेगी, हिलमिल गाँव की गोरी,
ठिठोरी ऐसी निगोड़ी।।

–९३–

ब्रज कुंजन में जाइ पकरि लाई, नंदजू के लाला।।
हा हा करावत पैयाँ परावत, ब्रज की बाल गुपाला।।
एक सखी कर पकरि नचावत, बहुत बजावत गाला।।
पाँय पैंजनी अधिक विराजै, बेंदी भाल विशाला।।
बेसरि की छवि कहाँ लगि बरनौं, झूमि रही मोती माला।।
आँखिन अंजन मुख बिच मंजन, लोग कहैं ब्रज बाला।।
आनि जसोमति यह छबि निरखति, मोहन मुरलीवाला।।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, खेलि रहे नंद लाला।।
'सूर' श्याम छबि कहाँ लगि बरनौं, मोहि लई ब्रजवाला।।

–९४–

साबरिया तू बेगि खबरि लीजो मोरी, मैं तो शरणागत हरि तेरी।।
बाप कहै बेटी ब्याहूँ द्वारका, भैया कहैं चँदेरी।।
जो शिशुपाल मौर धरि आवै, जरि बरि है जाउ ढेरी।।
सिंह शिकार स्यार लियें जावै, चहुँ दिसि असुरन घेरी।।
जरासन्ध शिशुपाल हुऐ हैं, जायगी लाज हरि तेरी।।
रूक्मिनी जी ने पाती भेजी, विप्र के हाथ सबेरी।।
पाती बाँचि विलम्ब न करियो, दीजो सँदेसौ बहोरी।।
कुण्डलपुर में देवी अंबिका, पूजन जैहों सबेरी।।
तहँ चलि अइयो कृष्ण कन्हैया, जनम जनम की चेरी।।

खण्ड- ख (धमार)

-९५-

ए मद छकी ग्वालिनि तेरौ जुबना जोर,
हँसि हँसि घूँघटरा क्यों न खोलै।।
फागुन मास में मान करति है,
काहे मुख सों सूधें क्यों न बोलें।।
रूप कौ भार दिना दस कौ री, बाँट गुमाननि तौलै।।
औसर पाय कैं आनंद करिये, काहे वन वन ऐड़ी बैड़ी डोलै।।

-९६-

होरी कौ छैल मदमातौ डोलै।।
सुरँग गुलाल कुमकुमा भरि भरि, केसरि रँग लै बोरै।।
हों कैसें निकसों गैल सखी री, आय सुधाइ पकरि बहियाँ झकझोरै।।
'चन्द्रसखी' यह ढीठ महरि कौ, कंचुकी तकि तोरै।।

-९७-

लाड़िली मान न करियै, होरी के दिनन में, कहा तुम्हारी बान।
बरस दिना कौ धौंस लाड़िली, बैठीं हौ भौंहें तान।।
मानि सिखावन लेहु आपनें, यह जिय में धरि ध्यान।।
'गुनविलास' पिय दूरि उठि चलौ, रूप केलि की खान।।

-९८-

सजि सजि आवत हैं ब्रज बाल खेलन होरी, शशिवदनी मृग-नैनी।।
केसरिया सिर चीर बसन्ती, फूलन गुंथी है बैनी।।
बाँयौ हाथ नचावत आवत, बोलत कोकिल बैनी।।
'रँगीले लाल' अँखियाँ अलसानी, झुकी हैं सावन कैसी रैनी।।

-९९-

होरी खेलन आई, बनि बनि बृज की बाल।।
हाथन पिचकारी रँग रँग लैकें, झोरिन लिये है गुलाल।।
गावति चली हैं सहज ही सुन्दरि, अति अनुराग बढ़यौ तेहि काल।।
झुरमुट दै करि घातनि चहुँ दिसि, घेरि लिये नन्दलाल।।
एक ने पकरि नचाय ठाड़ौ कीन्हों, एक नें अंजन बेदी भाल।।
राधा प्यारी के पाँय परौगे, तब छूटौगे लाल।।

-१००-

होरी खेलै लाल, ढफ बाजै ताल, जैसे झनन झनन नन नन नन।।
तेल फुलेल अबीर अरगजा भ्रमर उड़त, जैसें भन नन नन।।
निकसी कुँअरि ए झुमरि खेलन होरी, हस्ती छुटत जैसे सन नन नन।।
कँचन की पिचकारी लाई भरि-भरि, डारति सुरँग सबके तन नन।।
केसरि रंग की कींच मची है, उमड़ि घुमड़ि घन नन नन नन।।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, ग्वाल बाल सब सखन संग।।
'तानसेन' के प्रभु हो होरी खेलें, आनंद भयौ सबके मन नन।।

-१०१-

हो होरी खेलन आईं, आजु आई।।
बरसाने मधुबन की नारीं, लाज छाड़ि पति तजि तजि धाई।।
करि सिंगार चली ब्रज बनिता, चालि चलति गज गति हू लजाई।।
अंचल की ढालें मुख ऊपर, नैन की सैननि बान चलाई।।
इत गोपाल सखन सब सँग लियें, केसरि कुमकुम लिये हैं लुगाई।।
ऐसी भीर भई है परस्पर, नंद पौरि और जमुना के ताई।।
गोकुल धेरि लियौ चहुँ ओरन, हरि पकरन की घात लगाई।।
ग्वाल बाल सब भये है दुचीते, ललिता पकरि हलधर जू कों लाई।।
फगुआ देति लेति नहिं सुन्दरि, विनती करत त्रिभुवन पति राई।।
कोऊ सखी मिलि गुलचा मारै, अरु दोऊ हाथन हाहा खवाई।।
बड़े हो प्रवीन परे अवलनि बस, भूलि गये सिगरीं चतुराई।।
'सूर' सखिन के जब बस परिगे, राम स्याम दोऊ आखें अँजाई।।

-१०२-

होरी तौ का संग खेलियै हो, वे बलम परदेसीरा।।
अब रितु आई बसंत की हो, फूलन लागे टेसुरा।।
हमरे बलम सों यौं जाय कहियो, गोरीधन ढारे आँसूरा।।
गहरी नदिया नाव पुरानी, किस विधि पठवों संदेसुरा।।
बालापन की अबलौं निबही, अब निबहैं सो साँचीरा।।

–१०३–

हो हो कहि दौरीं, अहो ब्रज बाल।।
भरि भरि घट बंशीबट के तट, दै दै ओट तमाल।।
इत सुगन्ध लियें दीनबन्धु, उत भरत भामिनी भाल।।
पियत पियूष चन्द लागत मानों, खुले हैं व्यास के जाल।।
इत उझकत पियरौ पट पहिरैं, मानों फूले कंज सनाल।।
मुख देखत ऐसी लागति मानों, बुझि बरि उठत मसाल।।
'विद्याराम' दृगन देखत ही, मृगन भूलि गई चाल।।
खेलि फाग हिलि मिलि रस बस करि, घर आये नँदलाल।।

–१०४–

को खेलै ब्रज होरी रे ऊधो, को खेलै ब्रज होरी।।
चंग हमारी द्वारिका हो, हाथ हमारे है डोरी।।
अबकी चूक बकसि बृज मोहन, भूल्यो राह बटोही।।
इन नैंनन आस लगी हो, पंथ निहारति हौं हेरी।।
राधा के प्रभु दरसन दीजै, जनम जनम की चेरी।।

–१०५–

गोरी गोकुल गाँव न बसियै, जो लों होरी फागुन मास।।
बाहरि दुरजन लोग चबाई, घर में बैरिन सास।।
जौ खेलों तौ पिय अपने सँग, मन में अधिक हुलास।।
जाहु चले बलिहार बिहारी, पिया मिलन की आस।।

–१०६–

दंपति रास रच्यौ या ब्रज में, चलहु जाय देखन हो होरी।।
इत श्री मदन गोपाल लाल, उत यूथ यूथ मिलि राधा गोरी।।
केसरि बहुत मँगाय अबीर उड़ाय और लीन्हों भरि झोरी।।
ललिता मूठि चलाय दुहुन बिच, दीठि बचाय गाँठि कर जोरी।।
अँचल खस्यौ है जानि सकचीं दम्पत्ति, हँसि हँसि कर भौंह मरोरी।
चतुर सखी मिलि हँसी है हाथ दै, पाई है आजु दुहुन की चोरी।।
फगुआ देहु मँगाय 'मैन' प्रभु, फेंक पकरि यों कहत किशोरी।।
खेलि फाग हिलि मिलि रस बस करि आयेहैं जीति नंदकी पौरी।।

–१०७–

ए मनाऔ राजन रा मानो जी म्हारे राज।।
एजी थारे घोड़िला की बाजी घोड़ा टाप।।
ए हथानो म्हारो टोपनों जी म्हारो राज।।
एजी थारे बिछुअन बाजी झनकार,
ए अनवट झोखा लै रहो जी म्हारो राज।।
एजी थारै सालूरा में दीखै गोरा गात,
ए रंगाय दै म्हारो चूनरौ जी म्हारो राज।।
एजी थाने होरी तो कीन्हीं छै विदेस,
ए गन गौरें पूजन आवणौं जी म्हारो राज।।

–१०८–

मारू जी मतवारौ ढोलना,
एक कंत संग रँग लिये डोलै, जोवन की, ए मदछकी जोबन की।
अरज करों मुख माँड़ि सबन कौ, है कोऊ सारँग जादूगर कौ।।
रँग बरसै जैसें मेहरा, बरसन लागीं अबीर–गुलाल की बादरी।
सुरजन तुम घर नवल फाग है, दुरजन के घर होरी है सूनी।।

–१०९–

गाँव रसवादी के डर डरियै, पनियाँ कैसें जाउ।।
सुनियत है बंसीवट बारे, धूमधाम घमसान।।
या डर सों घर सों नहिं निकसों, धरति न बाहरि पाँव।।
गात छुअत वह ढीठ 'तोषनिधि' लोग करत बदनाम।।

–११०–

ए वीर मेरी पीर न जानै, ऐसी निपट वे पीर।।
राह चलत मेरी मटुकी फोरत, कैसे धरौं धीर।।
ए अब गोकुल में भई धूम फागु की, बहि रहौ रंग गम्भीर।।
बीच गोल में कान्हा डोलत, भरि गयौ आँखि अबीर।।
ए अब उत्पात होत नित वृज में, कासौ कहों ये पीर।।
रंग रसिया कछु धीर न लावै, आखिर जाति अहीर।।

-१११-

मोहन तुम जिनि जानो ढीठ लँगर हौ, हमहूँ तुम सन अगरीं।।
हमरौ गाँव बरसानौ कहियत, तुम्हारी गोकुल नगरी।।
तुम्हरे सँग में ग्वाल बहुत हैं, हमहूँ सखियाँ सिगरीं।
तुम्हरे सिर पर मोर मुकुट है, हमरे सिर पर चुनरी।।

-११२-

आइ गई सब, गोरी गोपाल बनीं, छैला आजु होरी के खेल में।
सारी सुरंग पै केसरि रंग की, बूँद परै तौ कहा मन मोहै।।
एते पै लाल गुलाल मलौ मुख, या छबि को बरनै कवि को है।।
घेरि लिये चहुँ ओर से ग्वालिनि, मानों मुनी बिच पींजरा सोहै।।

-११३-

होरी खेलत श्याम भवन में
वृन्दावन सुखधाम जु कहिऐ, मचि रह्यौ फाग गलिन में।
इत प्यारी उत कृष्ण मुरारी, नित नई चौप सखन में।।
पिचकारिन झर ल्यावै साँवरौ, उड़त गुलाल गगन में,
रंगी जुगल हरि रास रच्यौ है, राग होत है कुंजन में।।
साँवरे रंग सुरंग रँगे अरु, झलकत अबीर करन में।।
ग्वाल बाल सब सखन संग लियें, सीतल होत तन मन में।
'चन्द्रसखी' भजु बाल कृष्ण छबि, नँदलला है रँगन में।।

खण्ड- ग

-११४-

जा गली रे कान्हा मति आउ रे।।
कैसी करों ब्रजराज साँवरे, कीजै कौन उपाउ रे।।
मैं जमुना नित जाइहों मोहि, हरि दरसन कौ चाउ रे।।
सासु ननद लखि जायगी रे, यह चोरी की घात रे।।
हौं डरपति जिय आपने कोऊ, लेय हमारौ नाँउ रे।।
माहु निलज दिन फाग कौ, रसवादी गोकुल गाँउ रे।।
पग बेड़ी कुल कानि की अरु, कठिन प्रेम पुर वास रे।।
सोई कीजै प्रभु 'लछीराम' अब, जामें न लोग हँसाव रे।।

-११५-

मोहि मिलि गये कुँवर कन्हाई।।
हों दधि बेचन गई वृन्दावन, लौटि के देखी भीड़ गूजरिन।।
रंग की मचि रही घोर गैल में, दाबि पाँव भजि आई।।
बृज की होरी भई बौरी, कछु ना परत दिखाई।।
जँ देखौं तहँ धूम फाग की, सबकौ हि रंग समाई।।
गोपी ग्वाल फिरैं मदमाते, भूख प्यास बिसराई।।
दोऊ दलनि बिच झड़ी लगी है, कान्ह रहे मुसिकाई।।
साँझ भई सब घर कों लौटे, रंग में रहे चुचाई।।
गोकुल की महिमा अपार लखि, कवि बरनत सकुचाई।।

-११६-

बाट चलत मसकै मेरौ पाँव, जाकौ कैसौ स्वभाव।।
ग्वाल बाल लै मेरे घर आवै, मेरे ही अँगना धूम मचावै।।
घुसि करै शोर, और तोरै किवार।।
पनघट पै कोई जान न पावै, घट तोरै और कंठ लगावै।
लपिटत आवै गरे कैसौ हार।।
निशि दिन करत बात चोरी की, जानत नाहिं रीति होरी की।।
आखिर तौ है गऊअन कौ ग्वाल।।
'सालिगराम' तनिक हँसि बोलै, गुप्त गाँठि हृदय की खोलै।।
यह राधे तेरी रिझवार।।

-११७-

एक सूरा गायो गाय बजायो, गाय गाय के मगन भयौ।।
देवा के नन्दन तुम जग बंदन, तुम्हरे नाम कौ कोई न भयौ।।
एक नाग नापियो, गोवर्धन नख पर धारौ।।
एक रावण मारौ भुजा उखारौ राज विभीषण दे आए।।

-११८-

कान्ह तुम करत अटपटे ख्याल, मुख सों मलत गुलाल।।
बाट चलत मो सों करत मसखरी, डारत रंग गुलाल।।
प्रात होत सब घर सौं निकसीं, जल भरने ब्रजबाल।।
आय अचानक घेरि लई मग, हम हारीं सब बाल।।
बरजोरी करत खेलत है होरी, देत हाथ की ताल।।
'चिन्तामणि' के मन अति भावत, कौतुक करत गुपाल।।

-११९-

जब ते धोको दैकै गओ, काऊ के संग नाहिं खेली होरी।।
परसों की कहि गए, मानि गई मैं कैसी भोरी।।
बीतो बरस जो सिगरो, सूनर रहि गई अब कोरी।।
ऊधौजी तुम जाउ द्वारिका, लै पांती मोरी।।
लइयो बेगि लिवाय, उमरिया रहि गई थोरी।।
हम दैंइगीं प्राण गमाइ, या गति है जाइगी होरी।।
कहियो यों समझाय, दरस बिनु तरसैं बृज गोरी।।
बृजबाला दई हैं त्याग, प्रीत याने कुबजा सों जोरी।।
कहैं कवि 'घासीराम', सदा यह बनी रहै जोरी।।

-१२०-

ब्रज की तोहि लाज मुकट वारे, ब्रज की तोहि।।
चन्द्र-सूरज तेरो ध्यान धरत हैं, धरत ध्यान नवलख तारे।।
इन्द्र ने कोप कियो ब्रज ऊपर, नख शिख पर गिरवर धारे।।
'पुरुषोत्तम' प्रभु की छवि निरखत, गाइ गोप के रखवारे।।

-१२१-

अब जल कैसे जइयै, मचि रही मग धूम।।
छिरकत रंग नंद को ढौठा, धाय लेत मुख चूम।।
ग्वाल हू नाचैं, बाकी गोपी हू नाचैं, होरी की है रही धूम।।

-१२२-

यमुना तट श्याम खेलत होरी।।
दौरि दौरि पिचकारी चलावत, रंग अबीर भरें झोरी।।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, बरसत रंग उड़त रोरी।।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, सोहत है सुन्दर जोरी।।
हिल मिल फाग परस्पर खेलत, फेंकत है भरि भरि झोरी।।
'सूरदास' प्रभु रसिक सिरोमणि, चितवन श्याम बसी मोरी।।

-१२३-

लागे नेहा जनावना हो जसुदा के नैंना।।
हमसो नेह गेह काहू आनि सौं, हमसों लागे दुरावना।।
बीती रैनि पिया नहिं आये, अंचल लागे उड़ावना।।
पान की पीक लीक अंजन की, अधरन अधिक सुहावना।।
बिनु गुन बाल बाल बिन बेसरि, बाल लगे सुरझावना।।

-१२४-

एरी तेरो कान्हा चटक रंग डारै।।
एसो रंग डारै छुड़ाये नहीं छूटै,
लाख कोऊ फीचे पछीटै पखारे।।
तू जो वाय हटकै वो गैल मांहि सटकै,
मटकी मेरी फोरै और दधि लुढकावै।।
तू तो कहै वारौ वह ऐसौ अफारो,
'चन्द्र' ठाड़ी ठाड़ी बलैया उतारै।।

-१२५-

हो होरी आई, मोहन पै रंग डारो।।
केसर घोरौ लै जाय बोरो, कहूँ न रहै रंग कारो।।
ढूँढत ग्वाल गोपालहिं डोलत, कित गयो नन्द दुलारो।।
जा मोहन अपने के ऊपर, लै लै सरबस बारो।।
फगुआ लेउ मगाइ श्याम सौं, राधे के पाँयन डारो।।
आँखि आंजि मुँख माड़ौ रोरी, याके गालों पर गुलचा मारौ।।
तब छाँडो कहै अपने री मुँख सौं, हा हा हा हौं हारी।।
जन गोविन्द बलवीर बिहारी कों, नेक न उर सौं टारौ।।

-१२६-

होरी आई सब मिलेंगे, अपने-अपने यार से।।
हम गले मिल मिल के, रोयेंगे दरो दीवार से।.
कोई रंगे रंग में कपड़े, कोई उड़ावै है गुलाल।।
हमने कपड़े रंग लिये हैं, आँसुओं की धार से।।
कोई खेले रंग की होली, कोई नाचें दे दे ताल।।
हमने विरहा गीत गाए हैं, सनम की याद में।।

-१२७-

जियरा मैं बारौं, दिल लाग्यौ राम जू।।
पहलें पार मेरे सतगुरु उतरे, कैसें मिलौं बिच पानी।।
सुरति नेह की नैया बनाऊँ, नैना करों खैंमानी।।
हंस उड़े पर झुरमन लागे, सरबर अंत न जानी।।
एक जनाउर उड़ौ सखी री, लोटि बहुरि नहिं आनी।।

-१२८-

अँचरा न सम्हारें, बिरहा रस माती।।
ऊँचे घाट तर जमुना बहति है, तहाँ बैठी जेहरि भारै।।
जेहरि भारि धरै सिर ऊपर, मंद मंद पग धारै।।
जेहरि उतारि धरी अँगना में, तहाँ बैठी केसरि गारै।।
केसरि रंग भरै पिचकारी, लौहरे दिवर पै डारै।।
दियला उजेरि धरौं मंदिर में, तहाँ बैठी अंजन सारै।।
दै अंजन खंजन से नैना, रसिया ओर निहारे।।

-१२९-

हमारी तेरी नाहि वने-गिरधारी।।
तुम नन्दजी के छैल छबीले, मैं वृषभानु दुलारी।।
मैं जल जमुना भरन जातरी/ मग में खड़े बनवारी।। हमारी तेरी-
चीर हमारो देवो रे मोहन, सासु सुन दे गारी।।
तुमरो चीर जभी हम देंगे, जल से हो जावो न्यारी।। हमारी तेरी-
जल से न्यारी किस विध होवे, तुम पुरुष हम नारी।।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, तुम जीते हम हारी।। हमारी तेरी-

-१३०-

कोऊ कछू कहौ मन लागा रे।।
प्रीति करै तो ऐसी रे मोहन, सौने बीच सुहागा रे।।
हंसा कहत फकीरी लादौ, तन गुदरी मन धागा रे।।
सोय गये पिय जागत नाहीं, भोर होत उठि भागा रे।।

-१३१-

केसर की परै फुहार, कदम तन ढाडौ, भीजे साँवरो।।
ए पूरब दिशा, बदरा भए, और गिरे पछइयाँ मेघ।।
कदम तन ठाढो भीजैं सावरों।। केसरी की-
ए कौन की भीजें चुनरि और कौन की बिरहुलि फाग।।
कदम तन ठाढो भीजें सावरों।। केसर की-
ए राधे की भीजें चुनरी, और कान्ह की बिरहुल फाग।।
कदम तन ठाढो भीजें सावरो।। केसर की-

-१३२-

बालम काँकरिया मति घालौ, हमारैं लगि जैहै रे।।
लगि जैहै पीर हुइ है, सेजरिया दुख पै है।।
अरज सुनों पिया चोट न मारौ, ननदी बोल सुनैहै।।

-१३३-

बालम बेसरिया को लटकन, छैला टोरि डारौ रे।।
लटकन टोरौं गूँज मरोरी, जा सुनरा के छोरा।।
यह लटकन मेरी मात निसानी,मलिन कियौ मन मोरी।।

-१३४-

लाउ दर्जी के अंगिया मोरी।।
गज नहिं लायौ, कतन्नी नहीं लायौ, अगुरिन नापि लई छतियाँ कोरी।।
जा अँगिया सौं मोती लगे है, बन्द लगे हीरा लाल हजारी।।

-१३५-

सखी म्हारी नींद न सानी हो।
पियरो पंथ निहारताँ, सब रैन बिहारी हो।।
सखियाँ सब मिल सीख दिया, मन एक न मानी हो।।
बिन देख्याँ कल ना पड़े, मन रोष न ठानी हो।।
अँग खीन व्याकुल भयौ, मुख पीव-पीव वाणी हो।।
अन्तर वेदन विरह की म्हारी, पीड़ न जानी हो।।
ज्यूँ चातक धन कूँ रटौं, मछरी ज्यूँ पानी हो।।
'मीरा' व्याकुल विरहनी, सुद बुद बिसरानी हो।।

-१३६-

मोहन रंग मत डारो, कहो नैक मानौ हमारो।।
घेरत है पनघट पर नटखट, सांझ गिने न सकारो।।
ताली दे गारी गावत है, लै लै नाम हमारो।।
भयो ऐसे मतवारो। मोहन रंग-
होरी में बरजोरी रे कान्हा, पट घूँघट न उघारो।।
हा हा खाऊँ चुनरी मत पकड़ो, मूठ गुलाल न डारो।।
खड़ो हमरौ घरवारो। मोहन रंग-

-१३७-

लँगरि कजरा दै बजारैं मत जइए-तेरौ ढाड़ौ है माखन यार।।
छींकत पनियाँ हम चली, मेरे बाएँ बोलौ काग।।
कै सिर फूटै गागरी, कै मिलहिं पुरानों यार।।
ग्वाल बाल हुरिआने डोलै, गावत गीत मल्हार।।
गोकुल की सँकरी गलियन में, करि रहे हाल बेहाल।।

-१३८-

उठि मिलि ले राम लखन आए, उठि मिलि लै।।
रामहूँ आये लखनहू आए, मातु जानकी संग लाए।
रावण मारौं बाकी लंक उजारी, राज विभीषण दै आए।।
मंकुना हाथी जापै जरद अम्बारी, हनुमत चँवर ढुरत आए।।
'तुलसीदास' आस रघुवर की, अवधपुरी आनंद छाए।।

-१३९-

लोभी बृजराज अजहुँ नहिं आए।।
तीन कोस पर ऐसे विलके, करत न्याय सब सुधि बिसराए।।
नंद जसोदा व्याकुल डोलैं, काहू सौति ने वे भरमाए।।
राधा प्यारी सोच करति है, का कुबिजा सौं नेह लगाए।।

–१४०–

राज छम छम गोरी डगर चलति,
पग धरति लगति अति प्यारी हो।।
आऔ रजा हम चौपड़ि माड़ै, तुम पंसा हम सारी हो।।
खेलत खेलत रैन बीति गई, तुम जीते हम हारी हो।।
सौने के गुडुआ मौंज करै, जल भरन चलीं पनिहारी हो।।
सिर पर घड़ा घड़े पर झाड़ी, हाथों में रस्सी न्यारी हो।।
अनवट की तेरी सपथ करों, तेरे बिछुअन की झनकारी हो।।
एड़िन महावर लागि रह्यो, याके हाथों में मेंहदी न्यारी हो।।
माथै पै बिन्दी सोहि रही, याके दाँतों में मिस्सी लागी हो।।
'दामोदर' छवि कहाँ लौं बखानों, काऊ रसिया की प्यारी हो।।

–१४१–

ए री माँ हो, मटुकि गई फूटि,
बड़ी ननदी अरे सुनि लीजिए, छोटी ननदी अरे सुन लीजिए।।
दौरानी जिठानी मों सों बोलें बोल कुबोल।।
नंद लला के झकझोरन सों, गई रे हाथ सों छूटि।।
कर की चुरीं सब करकि मुरकि गई, मुतियन लर गई टूटि।।
सुन री सखी जा नंदलला सौं, लागी लगन गई छूटि।।

-१४२-

होरी खेलत संत सुजान, आत्माराम से होरी खेलत संत सुजान।।
कामी खेले कामिनी के संग, अभिमानी अभिमानी सें।।
जोगी खेलत जोग जतन सों, लोभी खेलत दाम सें।।
आत्माराम से होरी खेलत........
पंडित खेलो पोथी पतरनसो, काजी खेलत कुरान सें।।
पतिव्रता खेले अपने पतिसंग, वैश्या सकल जहान सें।।
आत्माराम से होरी खेलत........
अति प्रचण्ड वेग माया को, सब जग मारत वान सें।
कोटि के बीच कोई विरला, कबिरा बचा है गुरु ज्ञान सें।।
आत्माराम से होरी खेलत-

-१४३-

मैंने तेरा बड़ा मुलाहिजा कीना रे,
अरे चलि जारे, लँगर दगाबाज।
हौं कृष्णा सों बोली ना चाली, कृष्णा मोसों लड़ा।।
बरजि जसोदा अपने कन्हैयै, मारग रोकैं खड़ा।।

-१४४-

हो मदमाते छयलवा नैना उनींदे तेरे।।
अंत जायकें फाग मचायौ, कबहुँ न आयौ घर मेरे।।
अंजन रेख खची अधरन पर, लाल कपोल भये रे।।
जाहु चले जहँ रैन बिताई, क्यों मो सों रार करै रे।।

-१४५-
मोहि नंदलाल रँगि डारी।।
लै गागरि घर सों जो चली, भरने जमुना जल झारी।।
मारी पिचकारी मेरे सर रर ए, मेरी भींजी चूनरि सारी।।
बाट चलत घूँघट पट खोलत, मेरी और कंचुकी फारी।।
मलत गुलाल लाल मुख ए, मैं तो रही सकुच की मारी।।

-१४७-
रंग डारौ न मोपै रंग डारौ, हो नंद जूके लाला।
ए मदन गुपाला, हमारी तेरी ना बने।।
ए कान्हारे, अबही बिरज में आई, कि होरी मचाई,
घर जानैं न देइ बंसीवाला, ए मदन गुपाला,
हमारी तेरी ना बनें।।
ए गूजरि री, छबि तेरी अधिक सुहाई करै चतुराई।
और बोलत बचन रसाला, ए मदन गुपाला, हमारी तेरी ना बने।।

-१४८-
मथुरा की कुंज गलिन में, होरी खेलि रहे नँदलाल।।
पूरब में राधा प्यारी, पश्चिम में कृष्ण मुरारी
उत्तर दक्खिन गोपी-ग्वाल।।
उन भरि पिचकारी मारी, नई सारी सुधर बिगारी,
मुख मलि दियौ अबीर गुलाल।।
नये रंग के हौद भराये, छकरन में अबीर लदाये,
यहाँ मचौ नवेलौ फाग।।

-१४९-

तुम छके छैल से डोलौ।।
मनमोहन मदमाते छैला, मन आवै सोई बोलौ।।
अंत जायकें फाग मचावौ, हमरी डगरि कबहुँ नहिं आवौ।।
जाय रहौ उनहीं के मोहन, बतियाँ गढ़ि गढ़ि बोलौ।।
जानी मोहन प्रीति तुम्हारी, कपट गाँठि नहिं खोलौ।।
'हरीचन्द' मिलिबे के कारन, बतियाँ हँसि हँसि बोलौ।।

-१५०-

चालौ देखियै बरसाना, जहाँ मची रँगीली होरी।।
निकसीं है भवन-भवन तें, हाथों गुलाल रोरी।।
मनुहार कैसी झलकै, मानों प्रेम रंग बोरी।।
अबीर गुलाल की घुमड़नु में, पकरे है नंदलाला।।
फगुआ हमारी दीजै, हँसि माँगती बृजवाला।।
बाजै रबाव भेरी, ढपताल और मृदंगा।।
दीनारा बीन बाजै, महुअरि मुहचंग उपंगा।।
नँदनंदन श्रीगिरधारी, वृषभानु की दुलारी।।
'रसखान' खेलैं होरी, चिरजीव रहे यह जोरी।।

-१५१-

आजु मची श्याम रँग होरी,
संग नवल राधिका गोरी।।
करन कनक पिचकारिन भरत आवै,
धावत आवत रंग डारत सबन पर।
अबीर गुलाल मुख मलत चलत,
ऐसी चपल चाल चित चोरी।।
'कृष्णानन्द' हरखि निरखि सुर नर नाग,
अमर सिहात लखि गोपिन कौ अनुराग।
सुरपति सारदा सराहत सुहाग भाग, यह ब्रज सुबस बसौ री।।

-१५२-

लगत लिलार जा बैंदी बिन सूनौ मेरौ।।
घर मैंने झारौ अँगना बुहारौ।।
सैंया की सेज मैंने डारी फटकारि।।
सासु मैंने पूँछी ननद मैंने पूँछी,
सैयाँ सों पूँछी मैंने छाती सों लगाय।।

-१५३-

सैयाँ मेरे तुम जिन अबहिं मरोरो, अबै नादान रे सैयाँ।।
बारह बरस की हम भई सजनी, तेरह बरस सैयाँ।।
लै डोरा जब नापन लागे, बलम भये करिहइयाँ।।
आवन दै और जान दै रे बारी, बड़ी होन दै मोय।।
मुख पर फूलै केतकी अरु, छतियन लाल अनार।।

-१५४-

सैयाँ मेरे बाँधो लाल गिलोलि, सुअना बालि लै लै जाय।।
चन्द्र पुरुष हम खेती कीन्हीं वारी, सूरज पुरुष खरिहान।।
दोऊ जुबना के बैल बनाओं, सैयाँ को करौंगी किसान।।
नीम के नीचें चौंतरा री वारी, ता पे बैठी सुअना।।
जो जा सुअनें मारिहै रे, ता पै मारौंगी जहर बिस खाय।।
हरे पंख को हरियला रे, सौ सौ फेरी देइ।।
सुअना बैटी डार पै रै, कली कली रस लेई।

-१५५-

देखो री गोरी होरी को खिलैया।।
मैं दधि बेचन जाति वृन्दावन, रँग डारी चुनरि कन्हैया।।
'रामप्रताप' ढीठ नहिं मानत, हँसि मल करत ढिठैया।।

-१५६-

पौरि वृषभानु की, आजु रंग झर बरसै री।।
उड़त गुलाल लाल भए बादर, अतिरंग सरसैरी
बीच कुमकुमा की मूँठि, घननि जैसे दामिनी दमकै री।।
खेलत है दामिनी घन सुन्दर,
कृष्ण रसिक सँग री।।
'दया सखी' फागुन के दिननि में,
सावन सरसै री।।

-१५७-

कौन सौं लगाये नैना।।
एकन से गोरी मुख हू न बोले, एकनि दै गई सैना।।
बहुत न सों गोरी हंसि हंसि बोलें, एकन बिन बेचैना।।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, हरिचरनन चित दैना।।

-१५८-

मेरौ मन नंदलाल सों अटकौ।।
बौरानि सी फिरति कुंजनि में, सुधि ना घूँघट पट कौ।।
मन हरि लियौ नंद की ढौटा, मोर मुकुट को लटकौ।।

-१५९-

ए महादेव ए भोला, सादाशिव ए भोला,
बँगला छबाय देऊँ पाननि कौ।।
आक धतूरे के बाग लगाये,
लक्ष लुटाय कियौ घर चौरा।।
सेरक भाँग बिखेरि दई है,
झींकत जाति बटोरत ए गौरा।।
हों हँसि कें एक बात कही है,
डौरू कों डारि कितै गयौ ए भोला।।

-१६०-

रंग डारौ न मोहन गहूँ पैयाँ।।
साँझ भई घर जान दै मोहन, सँग की निकसि गई हमारी गुइयाँ।।
सासु बुरी घर ननद हठीली, जीती न छोड़ै हमारौ सैयाँ।।

-१६१-

अब रितु आयौ फागुन कौ, मै तो खेलौंगी पिय सँग फाग।।
खेलौंगी आपु खिलाऔंगी लाल को, भरि भरि मूठ गुलाल।।
संग की सहेली मोसों रूठी रूठी डोलैं, मोहि भरोसौ गुपाल।।

-१६२-

गिरधारी पिचकारी मोरे क्यों मारी रे,
निपट अनारी मेरी अँखियन में।
बरजि जसोदा अपने लाल कों, क्यों नहिं राखति आँखिन में।
चोवा चन्दन अतर अरगजा, अबीर भरें दोऊ हाथनि में।।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि न्यारी, लखि लीनौ मैंने लाखन में।।

-१६३-

रसिया को नारि बनाओ री।।
कटि लहँगा गल माँहि कचुकी, सिर सों चुनरि उड़ाऔ री।।
हाथन मेंहदी पाँव महावर, नकबेसरि पहनाऔ री।।
'नारायण प्रभु' तारी बजाय कें, जसुमति निकट नचाऔ री।।

-१६४-

आजु बिरज में होरी मोरे रसिया।।
अबीर गुलाल के बादर छाये, केसरि रंग में घोरी मेरे रसिया।।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ और नगारे की जोरी मेरे रसिया।।

-१६५-

कबसे तुम छैल बने रसिया।।
बन बन धेनु चरावत डोलत, हाथ लकुट अरु कटि कछिया।।
गुलचैगी कोऊ गाल गुलगुले, लाल लाल अरु किसमिसिया।।

–१६६–

अरे हाँ यार, जाइ लै दै झमियाँ।।
जाइ लै दै झमियाँ झमियन, पै मन लागि रहौ।।
अरे हाँ यार, जाकी गोरी गोरी बहियाँ।।
जाकी गोरी गोरी बहियाँ, हरी हरी चुड़ियाँ,
आगे अँगिलियाँ, पाछें पछिलियाँ, बीच बंगलियाँ, दसौ अँगुरियाँ,
मुदरी सोहै, बाजूबंद गाढ़े।।
अरे हाँ यार, अतलस कौ लहँगा।
अतलस कौ लहँगा, घूम घुमारौ, लागी किनारी, ऊपर सारी,
दस गज कौ, डंडिया।।
अरे हाँ यार, जाइ यार बुलायै।।
जाय यार बुलावै, का फरमावै,
अरे हाँ यार जाइ यार बुलावै पान खबावै, पीक डरावै।।
लौंगन कौ हरवा।।
अरे हाँ यार, जाइ बाग तमासें।।
जाय बाग तमासें, जाय बाग तमासें,
सोरह निब्बू, परसैं शिम्भू,
और कदम छइयाँ।।

–१६७–

बाजि रही पैजनियाँ, छम छम बाजि रही।।
कौने बनाइ दई पाँय पैंजनियाँ, कौने बनाई करधनियाँ।।
कौने गढ़ाइ दऔ गरे को हरवा, कौने नाक नथुनियाँ।।
ससुर बनाइ दई पांय पैजनियाँ, जेठ बनाइ दईं करधनियाँ।।
दिवर गढ़ाइ दऔ गरे कौ हरवा, सैंया नाक नथुनियाँ।।
कैसे टूटी पाँय पैंजनियाँ, कैसे टूटी करधनियाँ।।
कैसे टूटो गरे को हरवा, कैसें नाक नथुनियाँ।।
पाँय हले सौं पाँय पैजनियाँ, कमर हलें करधनियाँ।।
खेलत उड़ि गऔ गरे कौ हरवा, पोंछत नाक नथुनियाँ।।

–१६८–

बैंचि देउ अलबेली, ऐसो जोवना।।
ए, अभें तो रसिया द्वारें ठाड़ौ जोवना
फिरि ना मिलै बुलाऐं, ऐसे जौवना
बैंचि देउ अलबेली, ऐसो जोवना।।
ए, अभें लगत है एक रूपइया जोवना,
फिरि ना मिले अधेली, ऐसौ जोवना।।
बैंचि देउ अलबेली, ऐसो जोवना।।

-१६९-

ए, ढप बाजौ रे, छैल मतवारे कौ,

ढप बाजौ-----

ए मढ़हा हालै, तिवारौ मेरो हालौ।।

मढ़हा हालै, तिवारौ रे, हलौ खम्भ, चौवारे कौ।।

ढप बाजौ-----

ए, लहँगा हालो, मेरो लुगरा हालौ।।

लहँगा हालौ, मेरौ लुगरा रे, हालौ कुंदना नारे को।।

ढप बाजौ-----

-१७०-

अरे, झगड़ौ डारौ रे कन्हइया जू नें, गोकुल में।।

झगड़ौ----

अरे, जौ तुम कान्ह दूध के लोभी,

आँ हो, अब छोरि लाऔ बछरा, दुहाइ देउ,

गइयाँ सो गोकुल में

झगड़ौ----

अरे, जौ तुम कान्ह, दहीअ के लोभी,

आँ हो, अब टोरि लाऔ पात, बनाइ लाऔ दौना, सो गोकुल में

झगड़ौ----

-१७१-

नैंननि मैं पिचकारी दई, मोहि गारी दई, होरी खेली न जाय।।
तेरे लँगर लँगराई मो सौं कीन्ही, केसरि कींच कपोलनि दीन्हीं,
लै गुलाल ठाढ़ौ मृदु मुसिकाय।।
नैंक न कानि करत काहू की, आँखि बचावत बलदाऊ की,
यह उपाधि मो पै सही न जाय।।
औचक कुचनि कुमकुमा मारै, रंग सुरंग सीस पै डारै,
अंग लपटि हँसि हा हा खाय।।
होरी के दिनन मो सौं दूनोंदूनों अटकै, 'सालिगराम' कौन जाइ हटकै
यह ऊधम सुनि सासु रिसाय।।

-१७२-

तेरौ छैला गुपाल, नैननि में तकि मारै गुलाल।।
गोकुल गलियन धूम मचावै, आपु नचै और मोहि नचावै,
तारी बजाय सब आय गये ग्वाल।।
कर सोहै कंचन पिचकारी, भरि भरि सो मेरी छतियन मारी,
देखत है मेरौ रूप लुभाय।।
रपटि परी हों केशरि कीचें, बे भये ऊपर हों भयी नीचें,
या ऊधम कौ कौन हवाल।।

–१७३–

होरी खेलन आयौ श्याम, आज जाहि रंग में बोरौ री।
कोरे–कोरे कलश मँगाए, बामें केशर घोरौ री।।
रंग–बिरंग करौ, जाई कारे सै गोरी री।।
पार परोसिन सब मिलि, जाहि आंगन में घेरो री।।
पीताम्बर लेउ छिनाइ, आजु पहराय देउ चोरौ री।।
हरे बाँस की बँसुरिया, जाहि तोरि मरोरी री।।
तारी दै दै जाहि, नचावौ अपनी ओरौ री।।
'चन्द्रसखी' की यही बिनती, जब करै निहोरौ री।।
हा–हा खाय परै जब पैयाँ, तब जाहि छोरौ री।।

–१७४–

मृगनैनी तेरौ यार नवल रसिया।।
बड़ी–बड़ी अँखियाँ नैंनन कजरा, तेरी टेढ़ी चितवन मन बसिया।।
अतलस को याको लहँगा सोहै, झिलमिल सारी मेरे मन बसिया।।
छोटी सी अँगुरिन मुँदरी सोहै, याके बीच आरसी मन बसिया।।
बाँह–बरा बाजूबन्द सोहै, याके हियरें हार छिपत छतियाँ।।
रंग महल में सेज बिछाई, याको लाल पलँग पचरँग तकिया।।
'पुरुषोत्तम प्रभु' देख विवस भये, सबै छाँड़ि ब्रज में बसिया।।

-१७५-

आजु बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया।।
कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ कमोरी रे रसिया।।
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, राजा के हाथ कमोरी रे रसिया।।
अपने री अपने घर सें निकसीं, कोई श्यामल कोई गोरी रे रसिया।।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर रंग में घोरी रे रसिया।।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, और नगारे की जोड़ी रे रसिया।।
कै मन लाल गुलाल मँगायौ, कै मन केसर घोरी रे रसिया।।
सो मन लाल गुलाल मँगायौ, दस मन केसर घोरी रे रसिया।।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, जुग-जुग जियौ यह जोड़ी रे रसिया।।

-१७६-

अंग लिपट हँसि हा हा खाय, होरी खेली न जाय।।
भर भर झोर अबीर उड़ावै, केशर कुमकुम मुख लपटावै।।
या होरी कौ कहा उपाय।।
कोरे-कोरे माटन केशर घोरी, पचरंग चूनरि रंग में बोरी,
घर जाओं सुन सास रिसाय।।
घूँघट में पिचकारी मारै, सारी चोली, लहँगा फारैं,
मुख सौं आँचल देय हटाय।।

–१७७–

मति मारै दृगन की चोट, रसिया होरी में,
मेरी लग जायेगी।।
अबकी चोट बचाय गई सधिकैं, कर घूँघट की ओट,
भलाजी, देखो कर घूँघट की ओट, रसिया।।
हम तो हैं गोरी लाज लजीली, तुम में हैं बड़े खोट,
भलाजी देखो तुम में हैं बड़े खोट, रसिया।।
रसिक गोविन्द वहीं जाय खेलौ, जहाँ मिलै तेरी जोट,
भलाजी देखो मिलै तुम्हारी जोट रसिया।।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, हरि चरनन की ओट,
भलाजी देखो हरि चरनन की ओट, रसिया।।

–१७८–

यशोदा नन्द को हमें तो जोगिनियाँ बनाइ गयौ री।।
आप तो ओढ़ें शाल दुशाला, हमें तो कामरिया उढाईं गयौ री।।
आप तो खावे माखन मिश्री, हमें तो उपवासा कराय गयौ री।।
आप तो जाय द्वारिका छाये, हमें तो गोकुल में बसाइ गयौ री।।

–१७९–

होरी आई रे कान्ह ब्रज के बसिया।।
अपने री अपने भवन से निकसीं, कोऊ सांवर कोऊ गोरी।।
आइ अचानक कृष्ण मुरारी, पकरी बहियाँ मोरी,
जाय कहैं हम नन्द बबा सौं, कान्ह करत बरजोरी।।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, नाचत छोरा छोरी।।
ताता थेई ताता थेई, ता थेई ता थेई थेई,
धाकिट धुमकिट, धमक धमाकट,
कट किट कट किट किटक किटाकिट, किट धां किट धां।।

–१८०–

चलौ सखी जमुना पै, मची आज होरी,
नन्द के ने घेरि लई, राधा गोरी।
लियें कर में गुलाल, आयो जसुदा को लाल,
चलै अलबेली चाल, नाचै दै दै के ताल,
मारै पिचकारी कहै, होरी होरी।।
मेरी एक नहीं मानी, गई भरने को पानी,
नन्द के ने आनि, बहियाँ झकझोरी।।

–१८१–

देखो भींजे न चोली, भिंजोई मोरी सारी रे।।
नन्दगाँव के ग्वाल कहेंगे, बरसाने की होरी।।
बड़े रसीले सैया हमारे, सब देखें वह करें इशारे।।
मारे सरम के न बोली, भिंगोई मेरी साड़ी रे।।
तन नाचै मन नाचै गोरी, आज मची मेरे मन की होरी।।
तन मन सैं मोरे मन के राजा, होरी के दिन खेली होरी।।
सम्हल सम्हल पिचकारी मारो।।
केशर रंग में बोरी, भिंजोई मोरी साड़ी रे।।

–१८२–

सुनौ अरजी हमारी, नटवर गिरधारी, तोसौं बिन होरी खेलैं न जाऊँगी
बरस बाद आयो यह फागुन, अब तो अबीर लगाऊँगी।।
अब कित जात नन्द के जाये, मारों भरि पिचकारी।।
रँग में रगूँगी मैं संग में नचूँगी में, फाग संग तेरे गाऊँगी।।
यह त्यौहार न छोड़ूँगी सुनौ, चाहे दीजै तू गारी।।

-१८३-

लड़ैतौ नन्द को मोहि रंग में बोरे री।।
कैसे हूँ बरजौ नहिं मानें मटुकी फोरे री।।
छैल बनौ गलियन में डोले बांह मरोरेरी।।
अबीर गुलाल मलै अखियन में अंगिया छोरे री।।
पढ़ि करि के कांकरियां मारै मन को चोरैरी।।
ननद हमारी बड़ी चबाई संग बासौं जोरै री।।
कबहूँ सैन करै नैनन सों उर रस छोरैरी।।
'नवल' कहत कैसे ब्रज बसियै चुरियां टोरैरी।।

-१८४-

काहे करत बरजोरी रे ऐसी खेलो न होरी।।
गैल चलत तुम मोइ न घेरौ, मैं ग्वालिनियाँ भोरी रे।।
रँगि डारी, मेरी तास की अंगिया, सारी चुका रंग बोरी रे।।
अंखियन में गुलाल भरि दीन्हो बहियाँ पकरि के मरोरी रे।।
मुरकि गई मेरी नाक नथुनियाँ ऐसी धरि झकझोरी रे।।
अबतौ मोइ जान दै छलिया पीछें काहि परौरी रे।।
तोऊ ढीठ कहौ नहिं मानें, टेरतु कहि कहि गोरी रे।।
'नवल' कहत खीजत-२ में जुरी प्रीति की डोरी रे।।

-१८५-

बहियाँ पकरि के मरोरी, लला ऐसी खेलौ न होरी।
पहले तौ हंसि टेरि बुलावत नाहि करो तौ,
सोह दिवावत, फेरि करत बरजोरी। लला-
घूंघट में पिचकारी मारत सिरते पांइननों,
रंगि डारत मुतियन की लर टोरी। लला-
सुनतन अरज गरज में भूले देखि अकेली,
हंसे फूले गालनि मलि दई रोरी। लला-
ऐते हू पै भई न मन की चाह रही,
तोऊकाऊ छनकी रेशम अंगिया छोरी। लला-
बेदर्दी के काम न भावें छतियां दुखतिन,
बतियाँ आवें ऐसी धरि झकझोरी। लला-
अब तो ब्रज छांड़े ही बनि है अन्त कहूं,
अब होरी मनिहै 'नवल' नारि हों भोरी। लला-

–१८६–

सखी री को जाने पीर पराई।
जादिन तें वा स्याम सुन्दर ने देखौ मृदु मुस्काई।।
तादिन तें ऐसी अगिन लगी है दिन–दिन बढ़त सवाई।
दिन नहीं चैन राति नहिं निदिया भूखहूं प्यास गंवाई।
भूषण बसन नम कों भावें लोग कहत बौराई।
करौ कोऊ बेगि उपाई।
जनतंत्र जो तुमहू जानों आजु केहू अजमाई,
या बुलवाऔ चतुर गुनी कौं झाड़ू फूँकि करिजाई करौ इतनी सी सहाई।
मौकूं तौ दीसत है आली अब ना बचौ बचाई
'नवल' संवरिया आइ मिलै तो प्राननि लेहु बचाई
कहतिहों हा–हा खाई।।

–१८७–

स्याम मोरी चुनरी लाल रंगी री।
हुरआरौ बनि फिरत गलनि में औचक घेरि लई री।
मटुकि पटकि दहिया फैलायी बांहि मरोरी दई री
गुंज द्वै टूक करी री।
गालनिसों रोरी मलि दीन्हीं अंगिया फारि दई री,
ऐसौ जन्मों नन्दबबा कें, ना नेक न लाज रही री।
कहा कहो तो सौं ऐ सजनी अब नहीं जाति सही री।।

रंगि डारे दोऊ बारे जुबनबा, अंग लगाइ लई री।
पटकि मेरी कुगति करी री।
अब वाही सों खेलों होरी, मन में ठानि लई री।
मटकनि हंसनि बसी उर याकी, तासों कौन लरै री
'नवल' जो भई सो भई री।

-१८८-

होरी खेलत कुंवर कन्हाई, चलौ सखी जोरी बनाई।
अबीर गुलाल भरौ झोरिन में, केशरि लेउ मंगाई।।
आवत ही झट घेरि लेउ, फिरि भाजि न जाइ कन्हाई,
मुरलिया लेउ छिनाई।
बाजत चंग मृदंग खंजरी, ढफ ढोलक शहनाई,
ग्वाल बाल मिलि होरी गावत, नाचत कुंवर कन्हाई,
देखि छवि मदन लजाई।
अलकनि सों, टपकत रंग बरसत, जनु मेघा झर लाई,
पीताम्बर पटुका की पटतरि, ना चपला करि पाई।
'नवल' छवि बरन न जाई।।

–१८९–

पी प्याला और मगन मस्त रहु पर तिरियन सों डरा रहौ।
खाइलै पीलै मौजें कर, पोसाक पहिरलै अति खासी हाँ––
भरे बाजार में घोड़ा नाचाइ लै, जही बातहै आछी–यार पी प्याला।।

–१९०–

कौहू मारौ विरहिया बन यार, द्वारे सैं विरही फिर गयी।।
बान मान कित में गयौ रसिया हाँ
यहाँ डरी छोड़ि गयों, मोहि मोहि मोहि।।

–१९१–

ऐसी बंशी बजा रे मोहन, जैसी बजाई तैनें वा दिन की।।
काली मर्दन कंस निकंदन, गौतम नारि शिला तारी।।
बैठि कदम तन तेने बंशी बजाई, मोहि लई ब्रज की नारीं।।
भारत में भरई के अंडा, घंटा टूटि परयौ भारी।।
वा दिन वा दिन वा दिन की।।

–१९२–

तुम हम सों यारी कीजो हो, यार साँवलिया।।
प्रीति की रीति कठिन है मोहन, बदनामी सों डरियो।।
जो बदनामी सिर पै आवै, प्रीति सवाई करियो।।

-१९३-

जा बनै न जैहों रे, ब्रज नंद को साँवलिया, मोपे दान मांगेरे।।
जो जा वन कौ मारग जानैं, सों जा वन को जाइ।।
छीनि लई मेरी दधि की मटुकिया, लूटि लूटि दही खाय।।

-१९४-

तुम छके छैल से डोलौ, मनमोहन अलबेले लाला,
मन आवे सो बोलो।।
बरसाने की गूजरि आई, उन्हें पकरि झकझोरौ।।
कहौ सुनौ कछु मानत नाहीं, घूँघट के पट खोलौ।।

-१९५-

मेरो मन भावना आयौ नहिं आली।।
लागे मास असाढ़ री सजनी, सब कोऊ मंदिर छावै।।
हमरे मदिरवा को छावै, सिर पर आयौ सावना।।
भरि गये ताल सरोवर सजनी, बोले हैं दादुर मोरा।।
चातक बोल कुइलिया ए, पपीहरा जिय कौ जालना।।

-१९६-

कहाँ से लाऊँ, माँगे चन्दा खिलौना।।
भरि कें धार धरौं अंगना में, माँ सुत को भरमावै।।
कोटि उपाय करै जल भीतर, चंदा हाथ न आवै।।

–१९७–

कहाँ से पाये, दोऊ नैन बहुरिया।।
कै जे नैंन मिरग के हरिया, कै काहू के चुराये।
ना जे नैंन मिरग के हरिया, ना काहू के चुराये।।
सुधरि सुनारि गढ़ी कजरौटी, छैला हाथ बिकाये।।

–१९८–

मुतिया झलकावै, धन बैठी दुलीचा।।
चलि बालम बढ़ई कै चलियै, आछौ नीकौ पलिका बनइयै।।
रेशम बान बुनों है पलिका, साल सौं साल मिलइयै।।
चलि बालम दरजी के चलियै, आछौ नीकी चुलिया सिवइयै।।
चौंसठ बंद लगे चुलिया सों, हीरालाल लगइयै।।
चलि बालम बरई कै जइयें, आछौ नीकौ बीरा लगइयै।।
खैर सुपारी लोंग लायची, पियकों पान खवइयै।।

–१९९–

तुम भोरहीं आये होरी खेलन, रति कौन के रंग में रंगे हो लाल।।
पलक पीक अंजन अधरन अरु, दियें ही महावर तिलक भाल।।
'रामप्रताप' चतुर भामिनि बे, जिन मुख कियौ है गुलाल लाल।।

-२००-

सखि या घूँघट की लटक में, किन मारी पिचकारी।।
जिन मारी ते सनमुख अइयो, ना तरु दैहों में गारी।।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, तुम जीते हम हारी।।

-२०१-

कान्हा होरी के दिनन में, नित नई धूम मचावै।।
ग्वाल बाल सब सखन संग लियें, मेरे ही द्वारें आवै।।
कह्यौ सुनौ कछु मानत नाहीं, मन आवै सोई गावै।।
'नागरीदास' ढीठ लंगरवा, जाहि कोऊ समुझावै।।

-२०२-

कपोलन कौन दियो रे गुलाल। केशरि रँग छिरकौ तोरी सारी।।
मारत चलत आनि चहुँदसि सौ, पूँछति है ब्रजबाल।।
नहिं चितवत नहिं बोलत नैकहू, कौन कियो यह हाल।।
'ललित किशोरी' कहत क्यों न साची, तोहि मिले नंदलाल।।

-२०३-

लट उलझी सुलझाइजा रे बालम, मेरे कर मेंहदी लगी है।
सिर की साड़ी सरकि गई है, अपने ही हाथ उढ़ाइजा।।
माथे की बैंदी मेरी गिरि, जो परी है, हा हा करत लगाइजा।।
नीलाम्बर प्रभु गुन ना भूलौ, बीती नैन चवाइजा।।

-२०४-

मेरौ मन मुरली मधुर सुनि भटकौ।।
सोवति ही सुख रंग महल में, कान परी मन सटकौ।।
दम्पत्ति रास रच्यौ जमुना तट, लखि शोभा मन अटकौ।।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, राधा हरि को झटकौ।।
लीला बिच मोहन उठि धाये, गोपिन मन भयौ खटकौ।
सब ठाड़ी बौरी सी देखें, छिपि गयौ ढोटा नंद कौ।।
ढूँढौ बहुत पतौ नहिं पायौ, जमुना तट सिर पटकौ।।
रंगभूमि की महिमा अद्‌भुत, हरि गोपिन संग लपटौ।।

-२०५-

रस लै रे रसिया फाग कौ।।
लोग चबाउ करें घर घर में, मेरी तेरी लाग कौ।।
अबकी समुझि परैगी नंद के, बिन होरी अनुराग कौ।।
आज फाग बलिहार बिहारी, मानों भाग सुहाग कौ।।

-२०६-

ढफ बाजै मेरौ यार निकट आयौ।।
सुगन सखीं मेरो नाम लै कैं, मधुर सुर गारी गायौ।।
मेरे घर के द्वार खड़े हैं, अबीर गुलाल सों मारग छायौ।।
'हरीचंद' अब घर न रहौगी, मिलि करिहौं पिय मन भायो।।

–२०७–

पीरी परि गई रसिया के बोलन सों॥
आयौ जानि छैल होरी कौ, डरी लाज के बोलन सों॥
एक प्रीति दूजैं होरी सिर पै, कैसे बचिहौं ठठोलन सों॥
हरिचंद सब कोउ जानेंगे, मेरी गलियन डोलन सों॥

–२०८–

मैं तो चोंकि उठी ढप बाजन सों॥
सोबति ही सुख सेज अटरियाँ, जागी गारी गाजन सों॥
'हरिचंद' पिय भोरहिं होरी, खेलन आयौ साजनि सों॥

–२०९–

तेरी बेसरि कौ मोती थहरै॥
या लटकन में मेरौ मन लटकै, धीरज नहिं ठहरै॥
हरिचंद तेरी सुर्ख लहरिया, देखत मेरो मन लहरै॥

–२१०–

मदमाती रै करत मोसौं बरजोरी॥
झूमि झूमि करतलहिं बजावत, आवत छेल गैल मोरी॥
'रामप्रताप' पकरि बहियाँ मेरे, घूँघट खोलि मलै रोरी॥

-२११-

मेरी अँखियन भरत, रसिया ना मानें॥
अछन अछन पग धरै अलबेली, निरखि नबेली बाल॥
नयौ रे फाग जोवन गरवीलौ, करत अटपटे याल॥
जाहु चले बलिहार बिहारी, भुजबल होत निहाल॥

-२१२-

भीनी भीनी रात कान्हा, बंसिया बजाई हो॥
बंसिया की धुन मोरे, जियरा समाई हो॥
जबसे भनक पड़ी मोरे कानन, तब तें आनि बसौ मोरे नैनन॥
'रामप्रताप' रंगीलो छबीलो, सुनि सुनि सिजिया पै निंदिया न आई हो॥

-२१३-

हरि लियें रे लकुट खेलें होरीं॥
पहली होरी अवध में खेली, जहाँ सीता राम बनी जोड़ी॥
दूसरी होरी गया जी में खेली, जहाँ गजा गजाधर की जोड़ी॥
तीसरी होरी प्रयाग में खेली, जहाँ बैनीमाधो की जोड़ी॥
चौथी होरी बृन्दावन में खेली, जहाँ राधाकृष्ण बनी जोड़ी॥

-२१४-

गोरी लागोरी करिजवा, नजर भाला॥
साँवली सूरत बैन रसीले, भोरी नजर जादू डाला॥
'रामप्रताप' चलत मग झूमत, योंवन तेरो मतवाला॥

-२१५-

हम चाकर राधारानी के॥
श्री नदनंदन ठाकुर के वृषभान लली ठकुरानी के॥
निरभय रहत बदत नाहीं काहू, उर नहिं डरत भवानी के॥
'हरीचन्द्र' नित रहत दीवाने, सूरत अजब निवानी के॥

-२१६-

चलो अइयो रे श्याम मोरी पलकन पै॥
तू तो रीझो मेरे नवल जोवना, मैं रीझी तेरी चितवन पै॥
तू तो रीझो मोरी लटक चाल पै, मैं रीझी तेरी अकलन पै॥
'पुरुषोत्तम' प्रभु की छवि निरखै, अबीर गुलाल की झलकन पै॥

-२१७-

मैं तो मलौंगी गुलाल तेरे गालन मैं॥
मलि गुलाल आँखें आँजोगी, चोटी गुहोंगी बालन में॥
आज कसक सब दिन की निकसैं, बेंदी दै तेरे भालन में॥
हरीचन्द्र तोहि पकरि नचाउ, मीर बनूँ ब्रज बालन में॥

-२१८-

मोहि दै दै दान घूँघट बारी॥
कुंज बिहारी तो ढिंग ठाडौ, छोंड़ि लाजि कामिन प्यारी॥
घूँघट खोलि गुलाल मलन दै, मुँख चूमन दै री प्यारी॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, रसिक शिरोमणि गिरधारी॥

-२१९-

तोकों डारौंगी कमद, चढ़ि आउ रसिया॥
मेरे घर की गैल कठिन है, पाछे से चढ़ि आउ रसिया॥
माधो पिया मैं तेरी बलिहारी, मुरली की टेर सुनाउ रसिया॥

-२२०-

भजु रे मन, सिया रघुनन्दन कों॥
विश्वामित्त को यज्ञ कियो, कठिन धनुष के भंजन कों॥
जामवन्त सुग्रीव नील नल, कपिदल पार उतारन कों॥
दशरथनन्दन आनद कंदन, काटत जम के फंदन को॥

-२२१-

गोरी चुनरि कुसुम रंगाइलै री॥
यह बसन्त जोवन मदमातौ, नेह सुरंग बरसाइ लै री॥
जोवन जाय बहुरि नहि ए है, फगुआ खेल खिलाइ लै री॥
लागहु मान कान होइ प्रमुदित, जीवन सुख उपजाइ लै री॥
मिलिहैं बहुरि नेम सौं रसिया, जिय की हवस मिटाइ लैरी॥

-२२२-

श्याम जब आवौगे, मेरी गली॥
लैहों छिनाय पीत पट मुरली, तौ वृषभानु लली॥
भाजत हौ पिचकारी मारि कें, हौ तुम निपट छली॥
फगुआ गावौ लै नाम हमारौ, यह नहिं बात भली॥

-२२३-

छैल रंग, डारि गयौ मेरो वीर।।
भीजि गयौ मेरौ अतलस साँटा, सुरस संदली चीर।।
घालत कुंकुम ताकि कुचन पर, मख सों मलत अबीर।।
'ललित किशोरी' कर बरजोरी, ऐसौ निठुर बेपीर।।

-२२४-

आजु मो सों करि गयौ, श्याम ठगौरी।।
ना जानों बे छिपे कबके दइया, मोही सों घात कियौ री।।
छाती अछूती छुई छलिकैं मेरी, कुचकी फारि भजौ री।।

-२२५-

श्याम मुख रँग की बूँद ढरी।।
मानौ कनक कसौटी ऊपर, कंचन रेख खरी।।
भाल बिसाल गुलाल खसनि लखि, उपमा सब बिसरी।।
मानहुँ प्रथम किरन दिनकर की, अंबर में पसरी।।
रुचिर केस मनहुँ घन माला, बरसत अनंद करी।।
'सूरश्याम' निरखत यह शोभा, उपमा सब बिसरी।।

-२२६-

सखी मोहि, फागुन मास सुहावै।।
हरि आवें सब ग्वालिन लावें, प्रेम राग बगरावैं।।
इन्द्र अप्सरा नाचें गावें, भेद कों आँच लगावें।।
सब चलियो ब्रजराज दुलारे, जाय के फाग मचावें।।

–२२७–

ग्वाल तेरी, गइयाँ आनि चरी।।
गोकुल की यह पुष्प बाटिका, हम हाथनि संचरी।।
रंग बिरंगी औ पचरंगी, बेलें करी हरी।।
ऊधौ हरि कौ मथुरा लै गये, औचक गाज परी।।

–२२८–

अँखियाँ अब लागीं पछितान।।
श्याम सुँदर जब चले मधुपुरी, तब क्यों दीन्हों जान।।
पंथ न चलत संदेस न आवत, धीरज लहत न प्रान।।
हे ऊधो कहियो माधव सों, आवहु सारँग पान।।

–२२९–

सजन तोहि मुख, देखे की प्रीत।।
वे अपने यौवन मदमाते, कठिन विरह की रीत।।
जहाँ जाउ तहँ हँसि हँसि बोलत, गावत रस के गीत।।
'हरीचंद' मधुवन के भौंरा, हौ मतलब के गीत।।

–२३०–

कन्हाई माई, अँखियन होरी मचायै।।
अँखियन में अनुराग अरुणयी अँखियन रंग भरावैं।
अँखियन में ललचाय लालची, अँखियन लालच लायै।।
'नागरीदास' पैढि अँखियन में, फिरि अँखियन तरसावै।।

-२३१-

झूमत आवै मोहन मतवारौ, एरी सखी बाकौ ढंग है निरालौ।।
चपल नयन बाकी चितवन चंचल, श्याम सुन्दर काली कमली वालौ।।
मुख मुरलीधर अधर बजावत, वह नंदलाल जगत उजियारौ।।

-२३२-

मैं तो रही छै मनाय मनाय, मेरा प्यारा ना मानैं म्हारौ राज।।
वाकें बर पीपर कौ पेड़, सीतल बाकी छइयाँ म्हारौ राज।।
वाके कानन भँवर मलूक, लपेटा जामुनी म्हारौ राज।।
झूला झूलत नन्द किसोर, झुलावें कामिनी म्हारौ राज।।

-२३३-

हो हो होरी के दिनन में, मति जा स्वामी विदेस।।
जाहि विदेश बहुत दुख पै हो, हम जिय करब अंदेस।।
लाख कही मेरी एक न मानी, ऐसी ठानी है टेक।।
'सूरस्याम' तुम्हरौ मुख देखौं, तुम देखौ मेरौ भेस।।

-२३४-

एक फूल फूले आधी रतियाँ हो रामा, बाबा तोरी बगियाँ।।
बेलाफुलरी चमेलियारे फुलरी, एकफूल फूलैरी अटरिया हो रामा।।
चम्पाफूलरी, केतुकी फुलरी, एक फूल फूलैरी सिजरियाँ हो रामा।।

-२३५-

ढुलनी पै लागी रे नजरियाँ हो रामा, अब ना पहिरवाँ।।
ढुलनी पहरि, हम गई थीं बजरियाँ,
दिवरा की लागी रे, नजरिया हो रामा।।
ढुलनी पहरि, हम गई थीं सिजरियाँ,
सैयाँ की लागी रे, नजरिया हो राम।।

-२३६-

एहि ठैयाँ मुतिया हिरइली हो रामा, कहवा मैं ढूँढ़ लूँ।।
घर मैंने ढूँडो, अंगना बुहारो, सैयां की सेज पै न पइली हो रामा।।
सासजी सैं पूँछली, ननदजी सैं पूँछली,
दिवरा सैं पूछत लजाइ, गइली हो रामा।।
ना कहूँ अइली, ना कहूँ गइली,
हियरा में मुतिया समाइ गइली हो रामा।।

-२३७-

पिया जब जइहैं विदेसवा हो रामा, टिकुली लै अइहैं।
टिकुली के सँग सँग बिछुआ लै अइहैं,
बिछुआ पै मोहै, मेरौ मनवा हो रामा।।
बिछुआ के संग संग, कँगना लै अइहैं,
कँगना से सोहै, मेरौ हथवा हो रामा।।
पूरब जइहै पिछम को जइहै, पिया बिन सूनी मेरी सेजवा हो रामा।।

-२३८-

बन बन बँसिया बजावै हो रामा, केहू मन मोहना।।
अम्बवा की डाली पै, कुहकै कोयलिया।।
पीउ पीउ पपीहा पुकारे हो रामा।।
बन बन रँग, लाल टेसू फूले,
अम्बवा गयिल बौराय हो रामा।।

-२३९-

श्याम गये मधुवन कौं-हो रामा-छोड़ौ गोकुल को।
श्याम गए दाऊ कौ लै गए-बिलखि रही सब उनकौं-हो रामा।।
जब से गए कछु खबरि न लीनी- मन अटकौ दर्शन को-हो रामा।।
ऐसो हम तेरौ कहा बिगारौ-रात रात रथ सटकौ-हो रामा।।
करुण निधि अब बेगि खबर लेउ, हम तड़पै तेरी छवि कों हो रामा।।

-२४०-

छिटकल चैत के चँदनियाँ हो रामा, गोरी के अँगनवा।।
विरहा के मातल, गोरी सुतली अँगनवा।।
पिया बिन भावे ना, भवनवा हो रामा।।
कोइली के बोलिया, माहुर पियावे,
रहि रहि सताबेला, मदनवा हो रामा।।

–२४१–

चैत मास चुनरी, रँगाइदै हो रामा।।
मेंहदी लगाइ दै, पिया हथवा रचाइ दे,
हथवा के संग–संग, अँगुरिउ रचाइ दे।
बिच–बिच झुमकी, लगाइ दै हो रामा।।

पनवा खवाइ दै पिया, कजरा लगाइ दै,
कजरा के संग संग, गजरा लगाइ दै।
बिच बिच मुतिया, लगाइ दै हो रामा।

हथवा गुदाइ दै पिया, हरवा गढ़ाइ दै,
हरवा के संग संग, मुदरी मगाइ दै।
जहँ तहँ टिकुली, लगाइ दै हो रामा।।

–२४२–

बन जैहों बनिकैं जोगिनियाँ हो रामा, पिया के करनवा।।
छतवा मैं छोड़िहों, अटरिया में छोड़िहों।
छोड़ि जैहो सबरे, गवनवा हो रामा।।
सिजिया मैं छोड़िहों, सिंगरवा मैं छोरिहों।।
छोड़ि जैहों बाबा के, अँगनवा हो रामा।।

-२४३-

जिया जरत रहत, दिन रैन हो रामा।।
अगवा की डरिया, कोयलिया बोले,
तनिक आवत नहि चैन हो रामा।।
बागवानी में मधुर सुर बाजे,
विरही पपिहरा बोलन लागे।
मधुर-मधुर मुँख बैन हो रामा।।
आस अधूरी प्यासी उमरिया,
छाये अँधेरा, सूनी डगरिया।
दरस जिया, बेचैन हो रामा।।

-२४४-

होली चाली मेरे यार, बरस दिन कौं।।
श्री वंशीवट और, यमुना तट
कुंज गली रंग, छिरकन कौं।।
अब दुर्लभ है, मिलन बिहारी
मुख देखन अब, लोकन कौं।।

धार में नहात बहिजात सब पाप ताप कूल पै चले ते न कष्ट कटिजात है
रेत में सहेत लोटिपोटि के करोरनि के खोटने के खोट झटपट छटिजात है
कोटिक प्रपंचहू कछारन में छार होत कुंजनि में बैठि दुखपुंज छटिजात है
ऐसौ है प्रताप श्री बटेश्वरनाथजी की जमुना नहाएँ जम ताप मिटि जात है।

काशी बसि विश्वनाथ सेतबंधु रामेश्वर जाइ गुजरात सोमनाथ कहलाएहौ
मुक्ति के प्रदाता बनिछाए गढ़मुक्तेश्वर तिरहुत जाइ बैजनाथ बनि आए हो
गोला गोकरननाथ गोला में निवास करें भूतनाशिबेको भूतनाथ यश पाए हो
कहुं तारेश्वर, महेश्वर, विशेश्वरहु ब्रह्मलाल बनिकें बटेश्वर में आए हो।।

मुन्द्रनिकी माल विकराल व्याल अंग-२ सधन जटन बीच गंग भरमाए हो
वाहन अनंग न मृगेशमृग छाला धरि डमरू त्रिशूल दोनों हाथनि सजाए हो
वामअंग गिरिजा गजानन को गोदलिए दाहिने षडानन कौ आसन लगाए हो
पाप ताप दाप क्षार-२ करिबेके हेतु ब्रह्मलाल बनिके बटेश्वर में आए हो।

देवनि के देव महादेवजू त्रिशूलपाणि शम्भु औपनिकी वामदेव नाम पाए हो
ईश शिवशंकर, गिरीश गिरिजा केपति नीलकंठ कंठकाल कूटि धरिआए हो
रुद्रत्रिपुरारी असुरारी मदनारी हर कालहू के काल महाकाल कहलाए हो
कालेश्वर, योगेश्वर, भूतेश्वर, मश्मेश्वर ब्रह्मलाल बटेश्वर में आए हो।

नाथनिके नाथहों अनाथ दोनों हाथजोरि वंदना करतहों चरण विश्वनाथकी
आशुतोष आइ अविलम्ब अपनाऔ मोहू पापिन की पति में हो एक महापातकी।
'किकर' कहत देवते तीसकरोड़ जाके योगी ज्ञानीहूं के बात नहिं हाथ की।
मुक्ति-२ इंगितपै जाकेसदा नांचि रही ऐसी महाशक्तिहै बटेश्वर के नाथ की।